मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

खुदग़र्ज़ी

"लोगों से बढ़कर जमाअतों और पूरी-पूरी क़ौमों पर खुदपरस्ती और खुदग़र्ज़ी का शैतान हावी हो गया है। राजनीतिक पार्टियों, पार्टीवाद और धमण्ड में पड़ी हैं, इस क़ौमी खुदग़र्ज़ी ने सारी दुनिया को व्यापार की मण्डी या लोहार की भट्टी बनाकर रखा है और सारी ज़मीन को एक बड़े से जंग के मैदान में बदल दिया है। इस क़ौमी खुदग़र्ज़ी की ख़ातिर बड़ी से बड़ी अनैतिकता और असंवैधानिकता गवारा है। इसके ज़रा से इशारे पर लाखों बेगुनाह इन्सानों को मौत के घाट उतार दिया जाता है। एक क़ौम पर दूसरी क़ौम को हावी कर दिया जाता है। भेड़-बकरियों की तरह एक क़ौम को दूसरी क़ौम के हाथ बेच डाला जाता है। एक संगठित देश के टुकड़े-टुकड़े कर दिये जाते हैं।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह०)

February 2022

Rs.15/-

मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

इस्लामी भाइचारे का रिश्ता

"इस्लाम के नज़दीक वतन व मक़ाम और रंग व ज़बान का भेद कोई चीज़ नहीं। रंग व भाषा के भेद को वह अल्लाह की एक निशानी ज़रूर मानता है। इसको वह किसी इन्सानी बंटवारे की हद नहीं क़रार देता और इन्सान के तमाम दुनियावी रिश्ते ख़ुद इन्सान के बनाए हुए हैं। अस्ली रिश्ता सिर्फ़ एक है और वह वही है जो इन्सान को उसके ख़ालिक़ व परवरदिगार से क़रीब करता है। वह एक है, तो उसके मानने वालों को भी एक होना चाहिए। अगर कि समन्दरों के तूफ़ानों, पहाड़ों की बुलन्द चोटियों, ज़मीन के दूर–दराज़ के कोनों और जिन्स व नस्ल के बंटवारे ने उनको आपस में एक–दूसरे से अलग कर दिया हो, "बेशक तुम्हारी जमाअत एक ही उम्मत है और हम एक ही तुम्हारे परवरदिगार हैं।"

ऐ क़ौमी भाइयों! यही इस्लाम की वह व्यापक भाइचारे व इस्लामी दावत की एकता थी, जिसने ज़मीन के दूर–दराज़ के कोनों को एक कर दिया था। इस्लाम का उदय हिजाज़ के रेगिस्तान में हुआ, मगर अफ़्रीक़ा के रेगिस्तानों में उसकी आवाज़ बुलन्द हुई, बूक़ैस नामी पहाड़ की घाटियों से उठी मगर चीन की दीवार से "अश्हदुअन ला इलाहा इल्लल्लाह" की आवाज़ गूंजी, तारीख़ की नज़रें जिस वक़्त दजला व फ़रात के किनारे इस्लाम के मानने वालों के नक़्शे क़दम गिन रही थीं, ठीक उसी वक़्त गंगा व जमुना के किनारे सैंकड़ों हाथ थे जो एक अल्लाह के सामने अपना सर झुकाने के लिए वुज़ू कर रहे थे। यह पूरी दुनिया की अलग–अलग क़ौमें, ज़मीन के दूर–दराज़ के कोनों पर बसने वाली आबादियां मानों एक ही घर के अज़ीज़ थे, जिनको शैतान–ए–रजीम के बंटवारे ने एक–दूसरे से अलग कर दिया था, लेकिन ख़ुदा–ए–रहीम ने उन सदियों के बिछड़े दिलों को एक दायमी सुलह के ज़रिए फिर एक जगह जमा कर दिया और उनके रूठे हुए दिलों को इस तरह एक दूसरे से मना दिया कि तमाम पिछले शिकवे और शिकायतें भूलकर एक–दूसरे के भाई और सुख–दुख के साथी हो गए। "अल्लाह की उस नेमत को याद करो जो तुम पर नाज़िल की गई, जबकि तुम इस्लाम से पहले एक–दूसरे के दुश्मन थे, मगर इस्लाम ने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत पैदा कर दी और तुम दुश्मन की जगह एक–दूसरे के भाई–भाई हो गए।"

यह बरादरी ख़ुदा की क़ायम हुई बरादरी है, हर इन्सान जिसने कलिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" का क़रार किया, तो वह उस बिरादरी में शामिल हो गया, चाहे मिस्री हो, चाहे नाइजीरिया का वहशी हो, चाहे कुस्तुन्तुनिया का पढ़ा–लिखा तुर्क, लेकिन अगर वह मुस्लिम है तो उस एक ख़ानदान–ए–तौहीद का हिस्सा है, जिसका घराना किसी ख़ास वतन और जगह से ताल्लुक़ नहीं रखता, बल्कि तमाम दुनिया उसका वतन और तमाम क़ौमें उसकी प्यारी हैं।

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह०)

(ख़ुत्बा–ए–आज़ाद: १७–१८)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:२ फ़रवरी २०२२ ई० वर्ष:१४

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस्लाम में ख़ैरख़्वाही

अल्लाह के रसूल
(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)
ने फ़रमाया:

"दीन ख़ैरख़्वाही का नाम है।" हमने अर्ज़ किया: (ख़ैरख़्वाही) किसके लिए? रसूलुल्लाह (स०अ०व०) ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला के लिए, उसकी किताब के लिए, उसके रसूल के लिए, मुसलमानों के हुक्मरानों व अवाम के लिए"

सही मुस्लिम: 95

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 15रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉं, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

अपने सिवा हमें तो किसी का ...

मौलाना आमिर उस्मानी (रह०)

जिसने बुतों से हुक्म-ए-बग़ावत दिया नहीं
होगा खुदा किसी का वह मेरा खुदा नहीं

मैं क्या कहूं कि इश्क़ की कुदरत में क्या नहीं
लेकिन सरों में आज यह सौदा रहा नहीं

हम ही वफ़ा के अहद पे क़ायम न रह सके
अपने सिवा हमें तो किसी का गिला नहीं

सदियां हुई कि आयी थी गुलशन में फ़स्ल-ए-गुल
लेकिन दिलों से उसका तसव्वुर गया नहीं

इन्सान को जो सुकून दिल व जां न दे सके
वह इरतिक़ा किसी भी मर्ज़ की दवा नहीं

लज़्ज़त फ़रोश व रुह शिकन अस्र-ए-नौ के पास
सबकुछ तो है मगर दिल दर्द-ए-आशना नहीं

जिसके जुलू में जहद ओ अमल की तड़प न हो
वह सिर्फ़ एक फ़रेब-ए-दुआ है दुआ नहीं

मेम्बर से ले के मदरसा व खानकाह तक
आमिर कहां -- हुजूम-ए-नुमूद व रिया नहीं

इस अंक में:

खुदग़र्ज़ी का मानसून.....3
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मानवता का निर्माण.....4
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी

इस्लाम एक ग़ैरतमन्द मज़हब.....7
हज़रत मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी

हिल्फ़ुल फ़िज़ूल की ज़रूरत.....9
मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी

सच्चाई क्या है?.....11
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

उश्र व ज़कात के मसारिफ़.....13
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

बढ़ती आबादी एंव कुदरती वसाएल.....15
मुहम्मद फ़य्याज़ आलम क़ासमी

सेक्यूलरिज़्म (Secularism).....17
सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

राम राज्य का क़ाफ़िला कहाँ रुकेगा?.....19
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

खुदग़र्ज़ी का मानसून

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

जबसे चुनाव का बिगुल बजा है, लगता है कि पूरा देश दो हिस्सों में बट गया है। एक ग्राहक और दूसरा व्यापारी। बोलियां लग रही हैं, लगता है कि खुदग़र्ज़ी का मानसून छाया हुआ है। हर शख़्स को अपनी फ़िक्र है या अपनी पार्टी की चिन्ता है, और वह भी इसलिए कि इससे भी लोगों के अपने हित जुड़े हुए हैं। देश के बारे में चिन्ता करने वाले, उसको आगे बढ़ाने वाले और समाज को जो रोग लग गए हैं उनको दूर करने के बारे में सोचने वाले शायद चिराग़ लेकर ढूंढने से भी न मिलें।

इस समय ख़ास तौर पर जिस तरह फ़ासिस्ट ताक़तों ने सर उठाया है और सच्ची बात यह है कि ख़ालिस अपने हित के लिए देश के हितों को जिस तरह भेंट चढ़ाने की कोशिशें की जा रही हैं वह एक इन्तिहाई ख़तरनाक सूरतेहाल है। अगर खुदा न करे देश इसी राह पर चलता रहा तो इस देश की एकता व अखण्डता के लिए बड़ा ख़तरा पैदा हो जाएगा।

देश का लम्बा इतिहास बताता है कि यह एक फूलों का गुलदस्ता रहा है, विभिन्न प्रकार के विचारों के लोग यहां रहे हैं और सबको फलने–फूलने का अवसर दिया गया है। इस देश की यह विशेषता रही है कि यह प्रेम व भाईचारे की धरती रही है। हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी (रह0) जैसा अख़लाक़ व मुहब्बत का पैकर यहां पैदा हुआ जिसने पूरे देश को रोशनी पहुंचाई। आज भी उनका नाम मुहब्बत व एहतराम के जज़्बे के साथ लिया जाता है। मुस्लिम शासकों की उदारता की कहानियां आज भी किताबों में सुरक्षित है। अफ़सोस है कि इतिहास को भी नष्ट करने की कोशिशें जारी हैं और पाठ्यक्रम में भी ऐसी मनगढ़ंत बातें दाख़िल की जा रही हैं जो दिलों के दरमियान दरारें पैदा करने वाली हैं। ज़रूरत दिलों को जोड़ने की थी जिससे इन्सानों में आपसी मुहब्बत व हमदर्दी पैदा होती है और किसी भी देश के लिए सबसे अहम बात यह है कि वहां के लोग आपसी मिलाप व मुहब्बत के साथ रहें और उनकी योग्यता सकारात्मक तथा निर्माणी कामों में इस्तेमाल हों, जिससे देश का निर्माण हो, वरना आपस की लड़ाइयां देश को अन्दर ही अन्दर खोखला करने लगती हैं, फिर उनका संभालना मुश्किल हो जाता है। ज़रूरत है कि सब मिलकर देश का निर्माण करें, करप्शन को दूर करें, अमन व सुकून से ज़िन्दगी जिएं और जीने दें।

मज़हबी आज़ादी यहां के क़ानून का हिस्सा है। कानून राज किसी भी देश की एकता व अखण्डता तथा निर्माण व उन्नति के लिए बुनियादी हैसियत रखता है, वरना इसके दुष्परिणाम में जो अराजकता व अशांति होगी वह रोके न रुक सकेगी। हर व्यक्ति को, हर पार्टी को ठंडे दिल से सोचने की ज़रूरत है, अपने हित के लिए देश को किसी हैसियत से नुक़सान पहुंचाना हक़ीक़त में अपने को नुक़सान पहुंचाने के बराबर है। हम सब एक ही कश्ती के सवार हैं, कश्ती में अगर कोई सूराख़ करे, उसको नुक़सान पहुंचाए तो इससे हमारा वजूद ख़तरे में है, आदमी तकलीफ़ उठा ले लेकिन देश की सुरक्षा पर आंच न आने दे।

देश के उस समय के प्रधानमंत्री मिस्टर अटल बिहारी वाजपेयी जब हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह0) को देखने नदवे में आए, तो हज़रत मौलाना ने उनसे यही कहा कि वाजपेयी जी देश की चिन्ता कीजिए, इस कश्ती को कमज़ोर किया जा रहा है।

इलेक्शन के मौक़े पर हर उम्मीदवार को सिर्फ़ अपनी कामयाबी नज़र आती है और वह इसके लिए ऐसे नामुनासिब ज़रिये भी इस्तेमाल करता है जो कई बार देश के लिए नासूर साबित होते हैं, खुदग़र्ज़ी की यह शक्लें अगर बाक़ी रहीं तो यह बड़े ख़तरे की बात है।

सबको अपनी ज़ात और अपनी पार्टी से ऊपर उठ कर सोचना होगा और सबसे पहले देश के हित को सामने रखना होगा, देश रहेगा तो सब रहेंगे। हर–हर यहां का रहने वाला वह किसी मज़हब से ताल्लुक़ रखता हो या किसी ज़ात से, वह यहां के लिए एक एनर्जी की हैसियत रखता है खुद उसको भी समझना होगा और अपनी ज़िम्मेदारी अदा करनी होगी और दूसरे को भी यह समझना ज़रूरी है कि अगर वह किसी को भी कमज़ोर करता है तो वह इस देश की एक ताक़त को कमज़ोर कर रहा है।

मानवता का निर्माण

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

ख़राबी की जड़: बुराई तथा पाप की इच्छा – इतिहास का अध्ययन:

दोस्तों और भाइयो! आप में से अधिकतर लोगों ने इतिहास का अध्ययन किया होगा। इन्सान आज नये नहीं हैं। वह हज़ारों साल से आबाद हैं। उनके सैंकड़ों बरस का इतिहास सुरक्षित है। उस इतिहास की सतह पानी की सतह की तरह बराबर नहीं है। इसमें ज़बरदस्त उतार–चढ़ाव है। इसमें आदमी कहीं ऊँचा नज़र आता है कहीं नीचा। कभी ऐसा लगता है कि यह इन्सानों का इतिहास नहीं, ख़ूंख़ार दरिन्दों का इतिहास है, यह सबका इतिहास हो सकता है किन्तु मनुष्य का नहीं। इसके अध्ययन से मनुष्य का सर झुक जाता है कि हममें ऐसे लोग भी गुज़रे हैं। यह निर्णय तो आने वाली नस्लें लेंगी कि हम और आप कैसे आदमी थे, लेकिन यह अनुमान हम लगा सकते हैं कि इन्सानों का पिछला रिकार्ड कैसा है? इसमें बहुत से ऐसे दौर नज़र आते हैं कि अगर बस चले तो हम इतिहास से उन पन्नों को निकाल दें। ऐसा रिकार्ड कि हम बच्चों के हाथों में देने को तैयार नहीं। मुझे उसकी कहानी नहीं सुनानी, लेकिन मुझे एक हक़ीक़त की ओर ध्यान आकर्षित कराना है कि इतिहास में जो ऐसे ख़राब दौर गुज़रे हैं, उसमें ख़राबी की जड़ क्या है?

जब तक समाज में बुराई का रुझान तथा बिगाड़ की योग्यता न हो कोई उसको बिगाड़ नहीं सकता:

लोगो! साधारणतयः लोग किसी ख़ास वर्ग या कुछ लोगों और कभी–कभी तन्हा किसी एक को पूरे समाज की ख़राबी का ज़िम्मेदार बता देते हैं और समझते हैं कि उन ख़राब तत्वों ने या उस बिगड़े हुए व्यक्ति ने पूरे समाज को ग़लत रास्ते पर डाल दिया था। लेकिन मैं इस बात से सहमत नहीं। मैं इतिहास के अध्ययन के आधार पर कहता हूं कि एक मछली तालाब को गन्दा कर सकती है, लेकिन एक व्यक्ति सोसाइटी को बिगाड़ नहीं सकता। अर्थात अच्छे समाज में बुरे आदमी का गुज़र नहीं हो सकता, वह घुट–घुट कर मर जाएगा। जिस तरह मछली को पानी से निकाल दिया जाता है तो वह घुट कर मर जाती है, उसी प्रकार जो समाज बुराई को प्रोत्साहित नहीं करता, वह उसका स्वागत करने के लिये तैयार नहीं, उस समाज में बुराई तड़पने लगेगी, उसका दम घुटने लगेगा और वह दम तोड़ देगी।

हर ज़माने में अच्छे–बुरे इन्सान हुए हैं। लेकिन सब बुराइयों का उनको ज़िम्मेदार ठहराना और तमाम बुराइयों को उनके सर थोप देना ठीक नहीं। अगर कुछ बुरे लोग हावी हो गये थे तो उसका यह मतलब नहीं कि पूरी ज़िन्दगी का हैंडल उनके हाथ में था। वह जिस तरफ़ चाहते थे ज़िन्दगी को मोड़ देते थे, बल्कि बात यह है कि उस ज़माने में समाज में ख़ुद ख़राबी आ गयी थी। उस ज़माने का ज़मीर (अन्तरात्मा) गन्दा हो गया था। उसमें बुराइयों का रुझान पैदा हो गया था। उसके अन्दर अंधेर, अत्याचार तथा इच्छापूर्ति करने की ज़बरदस्त इच्छा पैदा हो गयी थी। वह स्वार्थी तथा नफ़्सपरस्त बन गया था। जिस दिल को घुन लग जाए, जो मन पापी हो जाए, आप उसे जरासीम से किसी तरह रोक नहीं सकते, आप उसको बेड़ियों में जकड़ करके भी रखेंगे तब भी उन चीज़ों से सुरक्षित नहीं रख सकते।

स्वार्थी मनुष्य:

हर ज़माने में कुछ ऐसे व्यक्ति रहे हैं, जिनका विश्वास था कि बस हम और हमारे परिवार वाले ही इन्सान हैं तथा बाक़ी सभी हमारे सेवक हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं करोड़ो इन्सानों को बसता देखते हैं, लेकिन वह स्वयं अपने ही सीमित वर्ग को मनुष्य समझते हैं। ऐसे लोग बस यह समझते हैं कि दुनिया में बस उन्हीं के परिवार के दस–ग्यारह या बीस–पच्चीस इन्सान बसते हैं। ऐसे मनुष्य हमेशा रहे हैं जो अपनी–अपनी समस्याओं तथा संबंधियों को देखने के लिए सूक्ष्मदर्शी रखते हैं तथा दूसरों को देखने के लिए उनकी आंखें भी बन्द होती हैं। बहुत से दो चश्में रखते हैं, एक से अपने को देखते हैं, दूसरे से बाक़ी दुनिया को देखते हैं। उन्हें नज़र भी नहीं आ रहा है कि इन्सान कहां हैं। मेरा मानना है कि उनके पास वह चश्मा है कि उसके द्वारा उन्हें अपने बच्चे आसमान से बातें

करते नज़र आते हैं। उनको अपनी राई पर्वत तथा दूसरों का पहाड़ ज़र्रा नज़र आता है।

सुधार के विभिन्न उपाय तथा अनुभवः

दुनिया के विभिन्न मनुष्यों ने अपनी–अपनी समझ के अनुसार जीवन के सुधार की पद्धति सोची तथा उन पर अमल करना शुरू कर दिया।

किसी ने कहा कि सारी ख़राबी की जड़ यह है कि इन्सानों को पेट भर खाने को नहीं मिलता। यही ज़िन्दगी को सबसे बड़ा रोग है। उन्होंने इसी मसले को अपना मिशन बना लिया। इसके नतीजे में पाप और बढ़ा। पहले लोग कमज़ोर थे, पाप भी उसी आधार पर कमज़ोर था, उन्होंने जब ख़ून के इंजेक्शन दिये जो क़ूव्वत–ए–हयात बढ़ाई तो उनके पाप भी ताक़तवर हो गये। दिल बदला नहीं, ज़मीर बदला नहीं, विचार बदले नहीं, ताक़त बढ़ गई, चिन्ता दूर हो गई, अन्तर यह आया कि पहले फटे कपड़े में पाप होते थे, अब क़ीमती लिबास में पाप होने लगे। पहले बेज़ोर और बेहुनर हाथों से पाप होते थे, अब ताक़तवर और हुनरमन्द हाथों से वही सब गुनाह होने लगे।

किसी ने कहाः शिक्षा की व्यवस्था की जाए। अज्ञानता, नाख़्वान्दगी ही फ़साद की जड़ है और सभी ख़राबियों की अस्ल वजह है। ज्ञान बढ़ा, लोगों ने जानकारियां प्राप्त कीं और नई–नई भाषाएं सीखीं, लेकिन जिनका ज़मीर फ़ासिद और ज़हन टेढ़ा था और दिल के अन्दर पाप बसा हुआ था उन्होंने ज्ञान को फ़साद और तख़्रीब का साधन बना लिया। खुली बात है कि अगर चोर को लोहारी का फ़न आ जाए तो वह तिजोरी तोड़ना सीखेगा। अब अगर किसी में ख़ुदा का डर और इन्सानों के प्रति हमदर्दी नहीं का रुझान नहीं है और अत्याचार करना उसके स्वभाव में है तो ज्ञान उसके हाथ में अत्याचार करने का यन्त्र दे देगा और उसे गुनाह तथा चोरी के नए–नए ढंग सिखाएगा।

कुछ लोगों ने संस्थाओं को सुधार का माध्यम समझा और अपनी सारी क्षमताएं लोगों की संस्थाओं पर ख़र्च कर दी, नतीजा यह हुआ कि बिगड़े हुए लोगों का एक बिगड़ा हुआ समूह तैयार हो गया। जो कार्य अभी तक अव्यवस्थित रूप से हो रहा था, अब व्यवस्थित रूप से होने लगा। अब षडयन्त्र तथा संस्था के साथ व्यवस्थित रूप से चोरी होने लगीं। लोगों ने व्यवहारिक शिक्षा, अन्रात्मा के सुधार की ओर तो ध्यान नहीं दिया, जैसे बुरे–भले लोग थे उन्हें व्यवस्थित करने ही को काम समझा। परिणाम यह हुआ कि दुर्व्यवहार को नई शक्ति प्राप्त हो गई। मैं तो कहूंगा कि अशिष्टों तथा चोरों व डाकूओं की संस्था न होती तो अच्छा था।

किसी ने कहा कि भाषाओं की भिन्नता तथा अधिकता फ़ित्ना व फ़साद की जड़ है। भाषा एक तथा मुश्तरक होनी चाहिए, इसी में देश की उन्नति, क़ौम की ख़ुशहाली तथा मानवता की सेवा है। लेकिन अगर लोग न बदलें, विचार न बदलें, मन की इच्छाएं तथा रूझान न बदलें, तो भाषा के बदल जाने या बोली के एक हो जाने से क्या ख़ास फ़ायदा होगा? मान लीजिए कि यदि सारी दुनिया के चोर तथा मुजरिम एक भाषा का प्रयोग करने लगें और एक ही बोली बोलें तो उससे दुनिया को क्या फ़ायदा होगा? तथा उससे चोरी तथा जुर्म की क्या रोकथाम होगी? मैं तो सोचता हूं कि इससे बजाए इसके कि चोरी और जुर्म कम हों, ज़्यादा होंगे और मुजरिम की पहचान में और दिक़्क़त होगी।

किसी ने कहा कि समय की सबसे बड़ी मांग तथा मानवता की सबसे बड़ी सेवा यह है कि संस्कृति एक हो जाए, मगर क्या आपको मालूम नहीं है कि यहां सभ्यताएं नहीं टकरातीं, हवस टकराती है, ''हम चो मा दीगरे नीस्त'' का ख़तरनाक जज़्बा टकराता है। हमारे बहुत से मार्गदर्शक बिना सोचे–समझे कहने लगें हैं कि यदि सारी दुनिया की सभ्यता एक हो जाए तो मानवता की नाव पार लग जाएगी। यदि पूरे देश का कल्चर एक हो जाए तो इस देश के रहने वाले शेर व शकर हो जाएगें। लेकिन दोस्तो! कल्चर का एक होना लाभकारी नहीं, बल्कि दिल का एक होना फ़ायदेमन्द है।

अगर लोग एक दिल न हुए तो एक ज़बान और तहज़ीब होने से कुछ फ़ायदा नहीं। जो लोग पहले से एक ज़बान हैं, और जिनकी सभ्यता एक जैसी है, उनमें कौन सी मुहब्बत व एकता है? क्या वे एक–दूसरे पर अत्याचार नहीं करते? क्या वे एक–दूसरे को धोखा नहीं देते? क्या उनमें लोग एक–दूसरे से परेशान नहीं हैं? क्या एक कल्चर, एक भाषा तथा एक सभ्यता के लोग आपस में नहीं लड़ते?

बहुत से लोगों ने कहा कि पहनावा एक हो, लेकिन जब किसी ज़बरदस्त को गिरेबान पकड़ने की आदत पड़ जाए और जेब कतरने की लत लग जाए, तो क्या वह पहनावे का सम्मान करेगा? क्या वह केवल इस कारण से अपने इरादे से दूर रहेगा कि उसी के जैसे कपड़े दूसरे व्यक्ति के शरीर पर भी हैं? मानवता का सम्मान दिल में न हो तो पहनावे का सम्मान कैसे पैदा होगा? पहनावे का

सम्मान तो मनुष्य के कारण है।

हृदय परिवर्तन के बिना जीवन परिवर्तन संभव नहीं:

दोस्तो! इन्सानियत के मसाएल और मुश्किलात का हल न लिबास की यकसानी है, न ज़बान और तहज़ीब का इश्तिराक, न मुल्क व वतन की वहदत, न इल्म व दौलत, न तहज़ीब व तन्ज़ीम, न वसाएल व ज़राए की कसरत, इन सब में कोई एक भी ऐसी ताक़त नहीं जो दुनिया को बदल दे, जब तक दिल की दुनिया नहीं बदलती बाहर की दुनिया नहीं बदल सकती। पूरी दुनिया की बागडोर दिल के हाथ है, ज़िन्दगी का सारा बिगाड़ दिल के बिगाड़ से शुरू हुआ है, लोग कहते हैं कि मछली सर की तरफ़ से सड़ना शुरू होती है, मैं कहता हूं कि इन्सान दिल की तरफ़ से सड़ता है, यहां से बिगाड़ शुरू होता है और सारी ज़िन्दगी में फैल जाता है।

पैग़म्बर इन्सानियत का मिज़ाज बदलते हैं:

पैग़म्बर यहीं से अपना काम शुरू करते हैं। वह ख़ूब समझते हैं कि यह सब दिल का क़ुसूर है, इन्सान का दिल बिगड़ गया है, उसके अन्दर चोरी, ज़ुल्म, दग़ाबाज़ी का जज़्बा और हवस पैदा हो गयी है। उसके अन्दर ख़्वाहिश का अफ़रियत है जो हर वक़्त उसको नचा रहा है और वह बच्चे की तरह उसके इशारों पर हरकत कर रहा है। पैग़म्बर कहते हैं कि सारी ख़राबियों की जड़ यह है कि इन्सान पापी हो गया है, उसके अन्दर बुराई का जज़्बा और उसका ज़बरदस्त मैलान पैदा हो गया है। इसलिए सबसे ज़रूरी और मुक़द्दम काम यह है कि उसके दिल की इस्लाह की जाए और उसके मन को मांझा जाए।

वह लोगों को फ़ाक़ा करते देखते हैं, इस मंज़र से उनका दिल जिस क़द्र दुखता है दुनिया में किसी का नहीं दुखता। उनको खाना–पीना दुश्वार हो जाता है, मगर वह हक़ीक़त पसंद होते हैं, वह यह नहीं करते कि उसी को मसला बनाकर उसके पीछे पड़ जाएं। इसलिए कि वह जानते हैं कि यह ख़राबी का नतीजा है, ख़राबी की जड़ नहीं। वह जानते हैं कि अगर लोगों के पेट भरने का सामान कर दिया जाए और ज़ाएद ग़ल्ला लेकर भूखों को दे दिया जाए तो एक वक़्ती और सतही इन्तिज़ाम होगा, वह ऐसी फ़िज़ा और ऐसे हालात पैदा करते हैं कि लोगों से दूसरों की भूख न देखी जा सके और ख़ुद अपने घर से ग़ल्ला लाकर लोगों के पास डाल जाएं।

इसके बरख़िलाफ़ लोग ऐसे हालात पैदा करते जाते हैं कि ग़ल्ला खिसकता और एक जगह जमा होता चला जाए। याद रखिए कि अगर ज़हनियत में तब्दीली नहीं हुई और ग़ल्ले की तक़सीम या रसद का इन्तिज़ाम कर दिया गया तो इसके बाद भी लोगों को ऐसा फ़न मालूम है कि दूसरों की झोली के दाने उनकी झोली में आ जाए और दौलत हर तरफ़ से सिमट कर उनके क़दमों में लग जाए। आपने शायद अलिफ़ लैला का क़िस्सा पढ़ा हो कि सिंधबाद जहाज़ी अपने एक सफ़र में एक मक़ाम पर पहुंचा उसने देखा कि जहाज़ का कप्तान बहुत फ़िक्रमन्द और ग़मगीन है। सिंधबाद ने सबब पूछा तो जहाज़ के नाख़ुदा ने बतलाया कि हम ग़लती से एक ऐसे मक़ाम पर आ गए हैं कि जहां से क़रीब मक़नातीस का एक पहाड़ है। अभी थोड़ी देर में हमारा जहाज़ उसके क़रीब पहुंच जाएगा। मक़नातीस लोहे को खींचता है, जब वह पहाड़ कशिश करेगा तो जहाज़ की सब कीलें और तख़्तों के क़ब्ज़े निकलकर पहाड़ से जा मिलेंगे और जहाज़ का बन्द–बन्द जुदा हो जाएगा, उस वक़्त हमारा जहाज़ डूबने से न बच सकेगा। चुनान्चे ऐसा ही वाक़्या पेश आया, मक़नातीस ने लोहे को खींचना शुरू कि और जहाज़ में जितना भी लोहे का सामान था सब खिंच–खिंच कर पहाड़ पर पहुंच गया और देखते–देखते जहाज़ ग़र्क हो गया। ख़ुश क़िस्मत सिंध बाद एक बहते हुए तख़्ते के सहारे किसी जज़ीरे में पहुंच गया और उसकी जान बच गयी।

यह क़िस्सा ग़लत हो या सही इससे मुझे कोई सरोकार नहीं, मगर मुझे आपको यह सुनाना था कि हमारी सोसाइटी में भी मक़नातीनस सिफ़त सरमाया दार और ताजिर मौजूद हैं, उन्हें आप भी मैग्नेट कहते हैं। वह ऐसी साज़िश करते हैं कि दौलत सिमटकर उनके घर में आ जाती है। वह ऐसा माशी जाल फैलाते हैं कि लोग चार व नाचार सबकुछ उनकी झोली में डाल देते हैं और अपने वसाएले ज़िन्दगी और ज़रूरियात उनके सुपुर्द करके फिर गुरबत और फ़ाक़ा कशी की ज़िन्दगी गुज़ारने लगते हैं। पैग़म्बर क़ल्ब की माहियत बदल देते हैं। वह इन्सान के अन्दर ऐसी तब्दीली पैदा करते हैं कि वह दूसरे इन्सान की फ़ाकाकशी को देख न सके। वह उसके अन्दर ईसार की रूह और क़ुर्बानी का जज़्बा और सच्ची इन्सानी हमदर्दी पैदा करते हैं। उनको दूसरों की ज़िन्दगी अपनी ज़िन्दगी से ज़्यादा अज़ीज़ हो जाती है। वह अपनी जान खोकर दूसरों की ज़िन्दगी बचाना चाहता है। वह अपने बच्चों को भूखा रखकर दूसरों का पेट भरना चाहता है। वह ख़तरों में अपने को डालकर दूसरों को ख़तरों से बचाना चाहता है।

इस्लाम

एक ग़ैरतमन्द मज़हब

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (रह०)

इस्लाम एक ग़ैरतमन्द मज़हब है, जो तमाम मज़हबों को मिटा देता है और उनको बातिल कर देता है। अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى﴾

(बस जिसने ताग़ूत का इनकार किया और अल्लाह पर ईमान लाया तो उसने मज़बूत कड़े को थाम लिया) (सूरह बक़राः 256)

आयत में अल्लाह पर ईमान लाने से पहले ताग़ूत क इनकार पर ज़ोर दिया गया है। उसका रद्द किया गया है और उसको नाक़ाबिले कुबूल बताया गया है। मालूम हुआ अल्लाह पर ईमान लाने के लिए दूसरी चीज़ों का इनकार ज़रूरी है। इसीलिए कलिमा–ए–तौहीद में पहले नफ़ी है फिर असबात है। वरना अगर सिर्फ़ असबात ही मक़सूद होता और नफ़ी की ज़रूरत न होती तो यूं होताः "اللہ ھو الإلہ الواحد" यानि तन्हा अल्लाह ही इलाह वाहिद है, लेकिन नफ़ी बहुत ज़रूरी है और उसके बग़ैर बात साफ़ नहीं हो सकती, इसीलिए कहा गया कि "لاالہ الااللہ" यानि कोई माबूद नहीं है मगर सिवाए अल्लाह के।

इस्लाम में मुकम्मल दाख़िल होने के लिए क़ौली नफ़ी के साथ अमली नफ़ी भी इन्तिहाई ज़रूरी है। यानि अगर कुफ़्रिया माहौल है और अक़ीदे पर ज़द पड़ रही है तो आदमी को ऐसे हालात में इस्लाम की कसौटी पर खरा उतरना पड़ेगा, चाहे जैसे ही नाख़ुशगवार हालात पेश आ जाएं और अगर आदमी अपने मज़हब में पुख़्ता न हो बल्कि जिस माहौल में रहे वैसा ही अपनेआप को बना लेता हो और किसी से लड़ाई–झगड़ा न करे तो उसकी ज़िन्दगी दुश्वार नहीं होगी, बल्कि तमाम लोग मिलकर ज़िन्दगी गुज़ारते रहेंगे, लेकिन इस्लाम का मुतालबा यह है कि अगर कोई शख़्स दीन–ए–हक़ कुबूल करता है तो उसको साबित क़दमी का मुज़ाहिरा करना पड़ेगा और ग़ैर मामूली मराहिल से भी गुज़रना होगा चाहे पूरा समाज उसके ख़िलाफ़ हो जाए और उस पर ज़िन्दगी का दायरा बिल्कुल तंग होता चला जाए। सूरह काफ़िरून में साफ़–साफ़ कह दिया गया है:

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ☆ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ☆ وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ☆ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ☆ وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ☆ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ﴾

(कह दीजिए ऐ इनकार करने वालो! मैं उसकी इबादत नहीं करता जिसकी तुम इबादत करते हो और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं और न मुझे उसकी इबादत करनी है जिसकी इबादत तुम करते रहे हो और न तुम्हें उसकी इबादत करनी है जिसकी इबादत मैं करता हूं, तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन) (सूरह काफ़िरूनः 1–6)

अल्लाह तआला ने इन्सान को इस दुनिया में अमल के लिए भेजा है। लिहाज़ा अगर इन्सान अच्छे आमाल करेगा तो अल्लाह तआला उसके साथ आख़िरत में अच्छा मामला करेगा और उसका बदला अता फ़रमाएगा। अल्लाह तआला इन्सान की हिम्मत और उसके क़ुर्बानी के जज़्बे या अल्लाह की रज़ा को अपनी रज़ा के ऊपर रखने के जज़्बे का इस तौर पर इम्तिहान लेता है कि वह दुनिया को इन्सान के लिए ज़ीनत बनाता है और ज़ीनत का मतलब यह है कि आदमी को किसी चीज़ में मज़ा मालूम हो और वह चीज़ अच्छी लगे, लिहाज़ा दुनिया में जितनी भी ज़ीनत की चीज़ें हैं वह इन्सान की सहूलत के लिए हैं, लेकिन उनको इस्तेमाल करने के लिए अल्लाह तआला ने कुछ हुक्म दिए हैं कि तुम फ़लां काम इस तरह से करो और इसमें अपना मज़ा न देखो बल्कि अल्लाह की रज़ा देखो। फिर भी अल्लाह तआला ने दुनिया में इन्सान को अमल का अख़्तियार दिया है और इस सिलसिले में उसके लिए कोई रुकावट नहीं रखी है, चाहे वह जिधर भी जाए। हालांकि अगर अल्लाह चाहता तो रुकावट पैदा कर सकता था। कुरआन मजीद में भी है कि अगर हम चाहते तो सब नेक हो जाते और कोई बुरा होता ही नहीं, लेकिन हमने इन्सानों को अमल का अख़्तियार इसलिए दिया है ताकि उनको आज़माया जा सके,

अगर वह चाहें तो बुराई अपनाएं और अगर चाहें तो अच्छाई अपनाएः ﴿وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَاهَا وَلَكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ﴾

(और अगर हमारी मशीयत ही होती तो हम हर शख़्स को उसका रास्ता दे ही देते लेकिन मेरी तरफ़ से यह बात तय हो चुकी कि मैं जहन्नम को इन्सानों और जिन्नातों सबसे भरकर रहूंगा) (सूरह सज्दाः 13)

﴿إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِراً وَإِمَّا كَفُوراً﴾

(हमने सही रास्ता उसे बता दिया है, अब चाहे वह एहसान माने या इनकार कर दे) (अलइन्सानः 3)

अल्लाह तआला ने इन्सानों को साफ़–साफ़ बता दिया है कि अगर तुम अच्छाई अपनओगे तो तुम्हारा नतीजा अच्छा होगा, लेकिन अगर तुम पर नफ़्स इतना ग़ालिब आ गया कि तुम अल्लाह की रज़ा को नज़रअन्दाज़ कर बैठे और नफ़्स की राहत को तरजीह देते रहे तो फिर तुम सिर्फ़ दुनिया में मज़े कर लो, इसलिए कि हमने यहां तुम्हें मज़े करने का अख़्तियार दिया है, और अगर यह अख़्तियार न होता तो फिर इम्तिहान भी न होता। लिहाज़ा अख़्तियार मिलने की वजह से तुम यहां मज़े उड़ा लो, लेकिन तुम्हें आख़िरत में नुक़सान पहुंचेगा और वहां तुम्हें इसका बहुत सख़्त नतीजा भुगतना पड़ेगा।

अल्लाह तआला कई बार बन्दों की नियतों और उसके जज़्बात को देखता है, क्योंकि इन्सान से बहुत सी बातें ऐसी होती हैं जो अल्लाह को खुश कर देती हैं और अल्लाह उनकी वजह से राज़ी हो जाता है, जैसा कि हदीस में है कि एक आदमी ने कुत्ते को पानी पिला दिया तो अल्लाह ने जन्नत दे दी, हालांकि कुत्ते को पानी पिलाना बहुत छोटी सी चीज़ है, लेकिन उसके अन्दर जो जज़्बा था वह अल्लाह ने पसंद किया, ज़ाहिर है अल्लाह को अख़्तियार है वह जिस चीज़ को पसंद कर ले, अगर वह चाहे तो छोटे अमल पर बड़ा बदल दे दे। हदीस में हैः

(हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः एक शख़्स ने एक कुत्ते को देखा जो प्यास की वजह से गीली मिट्टी को चाट रहा था, तो आदमी ने अपना मोज़ा उतारा और उसमें चुल्लू से पानी भरकर कुत्ते को पिलाया, यहां तक कि वह सैराब हो गया, तो अल्लाह तआला को उसका यह काम पसंद आया और उसको जन्नत में दाख़िल कर दिया) (सही बुख़ारीः 173)

मालूम हुआ कई बार आदमी से ऐसा अमल हो जाता है कि अल्लाह तआला उसकी ग़लतियों को भी माफ़ कर देता है और उसके साथ फ़ज़्ल का मामला फ़रमाता है और ऐसा लगातार होता रहता है, इन्सान को कई बार ख़ुद मालूम नहीं होता है कि अल्लाह को हमारा कौन सा अमल पसंद आ गया है, लेकिन दुनिया चूंकि इम्तिहान की जगह है, इसलिए उन चीज़ों को अल्लाह ज़ाहिर नहीं करता बल्कि छिपाए रखता है।

अल्लाह तआला ने किसी भी चीज़ को बेमक़सद पैदा नहीं किया, बल्कि हर चीज़ की एक गरज़ रखी है और इसी ग़रज़ के मुताबिक़ वह चीज़ अंजाम पा रही है। इन्सानों को भी अल्लाह ने यूं ही पैदा नहीं किया, बल्कि उनको पैदा करने का भी एक मक़सद है। क्योंकि इन्सान और जिन्नात दोनों का इम्तिहान मक़सूद है, इसीलिए अल्लाह तआला ने इन दोनों का अंजाम भी जन्नत और दोज़ख़ की शक्ल में पैदा किया है। उनके अलावा बाक़ी जो मख़लूक़ हैं उनको बनाने का मक़सद दूसरा है। लिहाज़ा वह मख़लूक़ बाक़ी रहेंगी या उसमें जो ख़त्म की जाने वाली हैं वह ख़त्म कर दी जाएंगी। अल्लाह तआला ने जानवरों को इन्सानों की ज़रूरत के लिए पैदा किया है, लिहाजा जब इन्सानों को उनसे वाबस्ता ज़रूरत ख़त्म होगी तो जानवर भी ख़त्म हो जाएंगे। लेकिन इन्सान और जिन्न यह दो मख़लूक़ ऐसी हैं जिनको अल्लाह तआला जन्नत या जहन्नम भेजेगा, उनके लिए अल्लाह तआला ने आख़िरत की ज़िन्दगी अस्ल रखी है और दुनिया की ज़िन्दगी उस तक पहुंचने का एक ज़रिया बनाई है, जहां हर इन्सान को अपने आमाल लेकर पहुंचना है। हर इन्सान दुनिया से आमाल ही लेकर जाएगा, लिहाज़ा जैसे आमाल लेकर जाएगा, उसी के लिहाज़ से आख़िरत में उसका अंजाम तय किया जाएगा कि वह किधर जाए। वहां उसको हमेशा रहना है, तो हमेशा कहां रहेगा, जन्नत में या जहन्नम में? इसलिए वहां रहने के लिए सिर्फ़ यही दो चीज़ें होंगी।

हिल्फुल फ़िज़ूल की ज़रूरत

मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की ज़ात को पूरी इन्सानियत के लिए उमूमन और उम्मत–ए–मुहम्मदिया के लिए खुसूसन उस्वा व नमूना बनाया गया है।

﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾

(यक़ीनन आपके लिए रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की ज़ात में बेहतरीन नमूना है)

इसमें इस बात की तरफ़ इशारा है कि इन्सान जिस तरह के भी हालात पेश आएं रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की मुबारक ज़िन्दगी में उसको नक़्शे राह और नमूना–ए–अम्र मिल जाएगा, वह ग़ालिब हो या मग़लूब, फ़तेहयाब हो या शिकस्त से दो–चार, मालदार हो या ग़रीब, दोस्तों के बीच हो या दुश्मनो के बीच, अपनों से पाला पड़ा हो या बेगानों से, हर जगह और हर हाल में सीरते तैय्यबा उसके लिए चिराग़े राह और ख़ज़रे तरीक़ है, शायद इसी मक़सद के तहत ने अपने इस महबूब व मक़बूल बन्दे को हर तरह की आज़माइशों से गुज़ारा है वह तमाम मुसीबतें जो इस उम्मत पर आ सकती हैं, उन सबसे आपको भी दो–चार किया गया है, ताकि जब ऐसे हालात पेश आएं तो मुसलमान नूर–ए–नुबूव्वत की रहनुमाई से महरूम न रह जाएं और उन्हें किसी और चिराग़ से रोशनी मुस्तआर न लेनी पड़े।

इस वक़्त हिन्दुस्तान के मुसलमान जिस सूरते हाल से दो–चार हैं, इसमें सीरत के एक ख़ास वाक़्ये को पढ़ने और उससे सबक़ हासिल करने की ज़रूरत है और वह है "हिल्फ़ुल फ़िज़ूल" का वाक़्या, वाक़्या का खुलासा यह है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को नबी बनाए जाने से पहले एक वाक़्या यह पेश आया कि क़बीला बनू जुबैद के एक साहब मक्का आए और उन्होंने आस बिन वाएल सहमी से अपना तिजारती माल फ़रोख़्त किया, आस ने क़ीमत की अदायगी में टाल–मटोल शुरू की और ज़ुल्म व इनकार पर उतर आया, चुनान्चे उस मुसाफ़िर ने ठीक उस वक़्त जब कुरैश सहन–ए–काबा में बैठा करते थे, बूक़ैस की पहाड़ी पर चढ़कर लोगों को आवाज़ दी कि एक मज़लूम शख़्स की पूंजी ले ली गई है, एक ऐसे शख़्स की जो अपने वतन और बाल–बच्चों से दूर है और हरम–ए–मोहतरत की वादी में मुक़ीम है, इस तरह के ज़ुल्म व ज़्यादती के वाक़्यात मक्का में पेश आते रहते थे, लेकिन इस अजनबी शख़्स ने कुछ ऐसे दर्द के साथ अपनी फ़रियाद पेश की कि कुरैश के रहम दिल लोग उससे मुतास्सिर हुए बग़ैर न रहे और कुरैशे मक्का के चन्द अहम ख़ानदान (बनू हाशिम, बनू मुत्तलिब, असद बिन अब्दुल इज़्ज़ा, ज़हरा बिन कलाब और तीन बिन मुर्रा) की अहम शख़्सियतें अब्दुल्लाह बिन जदआन के मकान में जमा हुईं और आपस में मुआहिदा किया कि मक्का में कोई भी मज़लूम हो, ख़्वाह मक्का का रहने वाला हो या मक्का के बाहर से आया हो, हम सब मिलकर उसकी मदद करेंगे और ज़ालिम को हक़ देने पर मजबूर करेंगे, इस मुआहिदे का नाम "हिल्फ़ुल फ़िज़ूल" रखा गया।

इस मुआहिदे की इसलिए ग़ैर मामूली अहमियत थी कि जज़ीरतुल अरब में कोई हुकूमत क़ायम नहीं थी, लॉ एंड आर्डर के लिए कोई बाक़ायदा निज़ाम नहीं था, अरब के मुख़्तलिफ़ क़बाएल के दरमियान बड़ा तास्सुब और तास्सुब की वजह से अपने ख़ानदान का तहफ़फ़ुज़ पाया जाता था लेकिन अगर कोई कमज़ोर ख़ानदान हो या अजनबी लोग हों तो उनका कोई पुरसाने हाल नहीं होता था, उन हालात में यह मुआहिदा लॉ एंड आर्डर को क़ायम रखने और कमज़ोरों को ताक़तवर के ज़ुल्म से बचाने की एक मुनज़्ज़म कोशिश थी, रसूलुल्लाह (स0अ0व0) बनफ़्से नफ़ीस इस मुआहिदे में शरीक थे और इस्लाम के ग़ल्बे के बाद भी फ़रमाया करते थे कि अगर अब भी मुझे इसकी तरफ़ दावत दी जाए तो मैं इसे क़ुबूल करूंगा। (फ़तेहुल बारीः 4/473)

हिन्दुस्तान में इस वक़्त मुसलमान जिस हालात से गुज़र रहे हैं और सियासी एतबार से जिस तन्हाई का शिकार हैं, उनके लिए सीरत का यह वाक़्या बेहतरीन पैग़ाम और उनकी दुश्वारियों का हल है, हिल्फ़ुल फ़िज़ूल किस माहौल में क़ायम की गई थी? ऐसे माहौल में जब ज़ालिमों को ज़ुल्म से रोकने वाली ताक़त मौजूद नहीं थी, जब मज़लूमों के लिए इन्साफ़ हासिल करने का कोई रास्ता नहीं था, जब बुराइयां थीं लेकिन बुराइयों को चैलेंज करने वाली कोई ताक़त नहीं थी, हिल्फ़ुल फ़िज़ूल का मक़सद क्या था? मुआशरे में इन्साफ़ क़ायम करना,

कमज़ोरों को इन्साफ़ दिलाना और ज़ुल्म से बचाना, हिल्फ़ुल फ़िज़ूल का तरीक़ा क्या था? जम्हूर की मदद से ज़ालिम का पंजा थामना, इज्तिमाई शीराज़ाबन्दी के ज़रिये क़यामे अद्ल की कोशिश करना, छोटी–छोटी ताक़तों को जमा करके एक बड़ी ताक़त इसलिए तैयार करना कि ज़ुल्म को रोका जाए और इन्साफ़ क़ायम किया जाए।

हमारे मुल्क में भी इस वक़्त यही सूरतेहाल है, ज़ुल्म का खूनी पंजा इतना ताक़तवर हो चुका है कि अलल ऐलान ख़ून की होली खेली जाती है, इज़्ज़त व आबरू पामाल की जाती है, बस्तियां उजाड़ी जाती हैं और लाशों पर चढ़कर इक़्तिदार के क़िले पर क़ब्ज़ा करने की जद्दोजहद की जाती है, होना तो यह चाहिए कि लोग इस सूरतेहाल को देखकर बेक़रार हो जाएं, हर ज़बान ऐसे ज़ालिम को टोके, हर हाथ ऐसे ज़ालिम को रोके और हर आंख उस पर ग़ैज़ व ग़ज़ब की आग फेंके, मगर अमलन सूरतेहाल यह है कि ज़ालिमों की हिमायत में नारे लगाए जा रहे हैं, मीडिया दरिन्दों को फ़रिश्ता बनाकर पेश कर रहा है और इंसाफ़ के क़ातिलों को हीरो बनाया जा रहा है, इन हालात में मुसलमान के लिए करने का काम यही है कि वह यहां एक नई शीराज़ाबन्दी करें, ख़ुद आपस के इख़्तिलाफ़ को नज़रंदाज़ करके कम से कम एक नुकाती सियासी एजेन्डे पर मुत्तफ़िक़ हो जाएं कि वह फ़िरक़ा परस्त सियासी ताक़तों से मुल्क कोक बचाएंगे और ऐसी हिकमते अमली अख़्तियार करेंगे कि आने वाले इलेक्शन में सेक्यूलर उम्मीदवार कामयाब हो सके, मिल्ली इत्तिहाद की इस कोशिश के साथ–साथ कम से तीन और तबक़ात को हमें जमा करना चाहिए, अव्वलनः दूसरी अक़्लियतों को, ख़ास कर सिख और ईसाई अक़्लियत को, जो हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में सियासी एतबार से फ़ैसलाकुन हैसियत की हामिल है, दूसरेः दलितों से जो हज़ारों सालों से मज़लूमाना ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और जिनको अपने बारे में यह एतराफ़ है कि वह हिन्दु नहीं हैं, उन्हें ज़बरदस्ती हिन्दु बना दिया गया है, तीसरेः सेक्यूलर बिरादरान–ए–वतन को, क्योंकि आज भी हिन्दु भाईयों की अक्सरियत इस मुल्क के फ़िरक़ावाराना रुख़ अख़्तियार करने पर फ़िक्रमन्द भी है और मुतासिफ़ भी, अगर मुसलमान इन तीनों गिरोहों को साथ लेकर एक हिल्फ़ुल फ़िज़ूर क़ायम करने में कामयाब हो जाएं, एक ऐसा मुश्तरका प्लेटफ़ार्म बनाएं जो हर ज़ुल्म के मुक़ाबले में कमरबस्ता हो और हर मज़लूम को इन्साफ़ दिलाने के लिए उठ खड़ा हो, किसी दलित के साथ ज़्यादती हो तो पुरअम्न तरीक़े पर मुसलमान एहतिजाज करें और किसी मुसलमान के साथ ज़्यादती हो तो उसके तहफ़्फ़ुज़ के लिए दलित आगे बढ़ें, अगर इस तरह का कोई प्लेटफ़ार्म क़ायम करने में मुसलमान कामयाब हो जाएं तो मौजूदा हालात में यह बहुत बड़ी कामयाबी होगी और बहुत से अमराज़ का मदावा और मुश्किलात का हल होगा।

इस मुल्क को बचाने, मुल्क के दस्तूर और उसकी जम्हूरी क़द्रों को बचाने और अद्ल व इन्साफ़ के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए न सिर्फ़ इस मुल्क की दूसरी बड़ी अक़्लियत होने के लिहाज़ से बल्कि ख़ैरे उम्मत होने की हैसियत से भी मुसलमानों का फ़रीज़ा है कि वह हक़ीर और वक़्ती सियासी मफ़ादात को नज़र में रखने के बजाए मुल्क व मिल्लत के वसीअतर मफ़ादात को सामने रखकर इस सिलसिले में पेश क़दमी करें, इस कोशिश में मन्सूबा बन्दी तो ज़रूर होनी चाहिए लेकिन उसकी तश्हीर नहीं होनी चाहिए, क्योंकि ऐसे मामलात की तश्हीर से फ़ायदा कम और नुक़सान ज़्यादा होता है, अगर मौजूदा हालात में मुसलमान बेसिम्ती का शिकार रहे, उन्होंने सोचे–समझे मन्सूबे के मुताबिक़ अपने लिए राहे अमल तय नहीं की, तो इतने बड़े नुक़सान का ख़तरा है जिसकी तलाफ़ी दुश्वार हो जाएगी, क्योंकि इस वक़्त हमारा मुल्क एक दोराहे पर खड़ा है, एक रास्ता यह है कि सेक्यूलर ताक़तें अपनी कमज़ोरी की वजह से फ़िरक़ापरस्त ताक़तों के सामने घुटने टेक दें और गोया अपनी शिकस्त का एतराफ़ कर लें, यहां तक कि यह मुल्क मुस्तक़िल तौर पर फ़िरक़ा परस्ती के रास्ते पर चला जाए, दूसरा रास्ता यह है कि मुसलमान सेक्यूलर अनासिर को एक प्लेटफ़ार्म पर जमा करें, उन्हें ताक़त पहुंचाएं, उनके अन्दर फ़िरक़ा परस्ती से लड़ने का हौसला पैदा करें और इस मुल्क को उन लोगों के रहम व करम पर न छोड़ें, जो इक़्तिदार को हासिल करने के लिए इन्सानी ख़ून का दरिया पार करने में कोई क़बाहत नहीं समझते।

सच्चाई क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

बदतरीन झूठ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र से रिवायह है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः बदतरीन झूठ यह है कि आदमी ने जिस चीज़ को देखा न हो उसके बारे में कहे कि मैंने उसको देखा है। (बुख़ारीः 7043)

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः इन्तिहाई बड़ा झूठ और इफ़्तिरा परदाज़ी यह है कि आदमी अपनी आंखों को वह दिखाए जो आंखों ने नहीं देखा, यानि ऐसे झूठे–झूठे ख़्वाब बयान करे जो ख़्वाब उसने देखे ही नहीं। अगर कोई शख़्स अपनी बुजुर्गी जताने के लिए, अपनी बड़ाई बताने के लिए या दुनिया के किसी और मक़सद के लिए झूठे ख़्वाब बयान करे तो यह इन्तिहाई बदतरीन गुनाह है। इसीलिए यह बात कही जाती है कि आदमी ख़्वाब बयान करे तो तभी बयान करे जब उसको सही–सही याद हो, अगर उसको याद नहीं है तो जितना याद है उतना बयान कर दे, लेकिन लोगों के अन्दर ख़्वाब में नमक–मिर्च लगाने की जो बीमारी है यह बहुत बड़े गुनाह की बात है, क्योंकि आंखों ने जो देखा नहीं उनको वह दिखाना जाएज़ नहीं है, बल्कि बदतरीन गुनाह है और इफ़्तिरा परदाज़ी की बात है, बेहतर यह है कि जितना ख़्वाब देखा है उतना बयान कर दे।

आम बोलचाल में झूठ

हदीस के अल्फ़ाज़ में उमूम है, इसलिए यह सिर्फ़ ख़्वाब ही से मुताल्लिक़ नहीं है, बल्कि इससे मुताल्लिक़ भी है कि आदमी ने जो नहीं देखा है उसे लोगों के सामने झूठ न बयान करे। लोगों का मिज़ाज यह होता है कि बेझिझक बोल देते हैं कि मैंने ऐसा देखा है। मेरी आंखो के सामने ऐसा हुआ है, हालांकि कुछ नहीं होता है और आदमी झूठ बोल रहा होता है। लिहाज़ा अगर कोई इस तरह की बात कह रहा है कि मेरी आंखो ने देखा है और मेरे सामने ऐसा हो रहा था हालांकि कुछ नहीं हो रहा था, बल्कि वह झूठ कह रहा था, गोया वह अपनी आंखो को वह दिखा रहा है जो उसकी आंखो ने नहीं देखा, तो यह बदतरीन गुनाह है और इन्तिहाई दर्जे की इफ़्तिरा परदाज़ी है, शरीअत का हुक्म यह है कि अगर किसी को बताना ही है तो जितना देखा है उतना बयान कर दे।

गवाही में झूठ

गवाही देने में ख़ास तौर पर ऐसा होता है कि वहां आदमी झूठ से काम लेता है, जज पूछता है कि बताओ तुमने क्या देखा? क्या क़त्ल तुम्हारे सामने हुआ? तो वह गवाही देता है कि हां मैंने अपनी आंखों से देखा। मेरे सामने इस शख़्स ने फ़लां को गोली मारी। जबकि उसने कुछ नहीं देखा होता है, वह सिर्फ़ झूठ बोलता है, झूठी गवाही दे रहा होता है, याद रहे झूठी गवाही इन्तिहाई बदतरीन गुनाहों में से और सात बड़े गुनाहों में से एक है जिनको हदीस शरीफ़ में मोबक़ात कहा गया है यानि वह गुनाह जो बर्बाद कर देने वाले, हलाक कर देने वाले और जहन्नम में पहुंचाने वाले हैं, उनमें से एक झूठी गवाही देना भी है।

झूठे ख़्वाबों का मक़सद और कुरआनी हुक्म

झूठे ख़्वाब बयान करना बड़े गुनाह की बात है। आदमी को ख़्वाब बयान करना भी है तो उतना ही बयान करे जितना देखा है। आम तौर से लोगों के अन्दर यह बीमारी होती है कि वह अपनी बात इसीलिए कहते हैं कि अपनी बड़ाई का मुज़ाहिरा कर सकें, ताकि लोग मोतक़िद हो जाएं और लोगों का भी हाल यह है कि लोग कुछ नहीं जानते, कोई बड़ा ख़्वाब बयान कर दे, झूठ बयान करे या सच बयान करे तो लोग फ़ौरन उसके मुरीद हो जाते हैं। ज़ाहिर है यह इन्तिहाई बेवकूफ़ी की बात है। होना यह चाहिए कि आदमी देखे कि वह सुन्नत पर चलता है या नहीं? इसीलिए कुरआन मजीद में यह बात भी कही गयी कि ﴿كُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ﴾ यानि सच्चों के साथ रहो। यह सबसे बड़ी बात है, लिहाज़ा पहले आदमी पता लगाए कि सामने वाला शख़्स झूठ बोल रहा है या सच बोल रहा है, कहीं वह झूठा ख्वाब व झूठी करामत तो बयान

नहीं कर रहा है। वाक़्या यह है कि जो लोग करामतें या ख़्वाब बयान करते हैं, वह अक्सर झूठे होते हैं। अगर कोई अल्लाह वाला है, वह कभी भी अपनी बुज़ुर्गी की बात बयान नहीं करेगा और लोगों के सामने कभी बरसरे आम ख़्वाब बयान नहीं करेगा। अल्लाह वाले तो छिपाने वाले होते हैं। इसीलिए जो लोग भी ऐसा करते हैं वह आम तौर से झूठे होते हैं और यह इन्तिहाई गुनाह की बात है कि जो चीज़ें उसने देखी नहीं हैं, जो हक़ीक़त से ख़ाली हैं उन बातों का वह तज़किरा करे और अपनी आंखों को वह दिखाए जो उसकी आंखों ने देखा नहीं, बेशक यह बड़े गुनाहों में से है और बड़े झूठ में से है, उससे बचने की ज़रूरत है।

ख़्वाब में ज़ियारत–ए– रसूलुल्लाह (स0अ0व0)

यहां एक बहुत अहम मसला यह है कि लोग रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को तज़किरा करते हैं कि हमने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को ख़्वाब में देखा है। यह बड़ा नाज़ुक मसला है। यक़ीनन रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की ज़ियारत बहुत बड़ी नेकी की बात है, लेकिन इसमें कई बार ग़लत फ़हमियां होती हैं, हदीस में आता हैः "शैतान मेरी शक्ल में नहीं आ सकता।" (बुख़ारीः 6197)

यानि शैतान रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की शक्ल अख़्तियार नहीं कर सकता। यह हक़ीक़त है कि जिसने अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) को ख़्वाब में देखा वह हुज़ूर को ही देखने वाला है, इसमें कोई धोखा मुमकिन नहीं। शैतान धोखा नहीं दे सकता और रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की मुबारक शक्ल में शैतान नहीं आ सकता, लेकिन यह तय करना कि उसने ख़्वाब में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ही को देखा है यह ज़रा मुश्किल काम है, इसका शुब्हा होता है कि किसी दूसरी शक्ल में शैतान आए और यह बावर कराए कि देखने वाला रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को देख रहा है, हालांकि वह हुज़ूर नहीं हैं। क्योंकि शैतान हुज़ूर की शक्ल में नहीं आ सकता, लेकिन वह दूसरी शक्ल में आकर यह बावर करा सकता है कि देखने वाला मानो रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को देख रहा है। इसीलिए आदमी को धोखा होता है।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को अगर आदमी उसी मुबारक शक्ल व सूरत में देख रहा है जो शमाएल में मनकूल है तो उम्मीद यही है कि उसने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को देखा है और उसकी एक अलामत यह है कि ख़्वाब के बाद ज़िन्दगी पर उसका असर पड़ना चाहिए। अगर ख़्वाब के बाद सुन्नतों का एहतिमाम बढ़ गया, अल्लाह से ताल्लुक़ बढ़ गया, ज़िन्दगी में कोई बदलाव नज़र आने लगा, तो यह एक पहचान है कि मानो उसने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को देखा, वरना रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को अगर उस मुबारक शक्ल में नहीं देखा जो शमाएल में है तो फिर यह यक़ीनी तौर पर नहीं कहा जा सकता कि उसने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को देखा है, लिहाज़ा इसमें धोखा नहीं होना चाहिए।

ख़्वाब बयानी में एहतियात

ख़्वाब में ज़ियारत–ए–रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के मसले में लोग बड़ी बेएहतियाती करते हैं और बड़ी आसानी के साथ बयान कर देते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को देखा। यक़ीनन कितनी बड़ी सआदत की बात है। लेकिन अव्वल तो ख़्वाब हर एक को बयान नहीं करना चाहिए, अगर कोई बहुत ख़ास ताल्लुक़ का हो, चाहने वाला हो, समझदार हो, ज़हीन हो, उससे आदमी ख़्वाब कहे तो उसका फ़ायदा यह है कि वह अच्छी ताबीर देगा और ख़्वाब ताबीर पर मुअल्लक़ होता है, जैसी ताबीर दी जाती है बाज़ मरतबा उसके मुताबिक़ होता है। तो अगर किसी ऐसे शख़्स को उसने ख़्वाब बयान कर दिया जो उससे दुश्मनी रखता है, या अन्दर से कुछ बुग़्ज़ रखता है तो ज़ाहिर सी बात है कि वह उसकी ग़लत ताबीर देगा और उससे उसको नुक़सान भी हो सकता है, या वह अपने किसी ऐसे चाहने वाले को ख़्वाब बयान कर रहा है जो बुद्धू है और समझदार नहीं है तो वह जल्दी में कोई उल्टी–सीधी ताबीर दे देगा, लिहाज़ा ख़्वाब को हर जगह बयान भी नहीं करना चाहिए। बाज़ मरतबा यह होता है कि आदमी अपनी बड़ाई का इज़हार करने के लिए ख़्वाब बयान करता है, बड़ाई का मुज़ाहिरा यूं भी ग़लत है, अल्लाह को यह चीज़ पसंद नहीं है।

उश्र व ज़कात के मसारिफ़

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

उश्र व ज़कात के मसारिफ़ अल्लाह तआला ने तफ़सील से कुरआन में बयान कर दिये हैं और बहुत सी क़ैद हदीसों में लगा दी गयी है। लिहाज़ा ज़कात सिर्फ़ उन्हीं मसारिफ़ में ख़र्च की जा सकती है। उनके अलावा किसी भी मसरफ़ में ज़कात देने से अदायगी नहीं होगी और फिर से अदा करना होगा, मसारिफ़ का ज़िक्र करते हुए अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ﴾

"ज़कात हक़ है मुफ़लिसों का और मोहताजों का और उसके काम पर जाने वालों का और उनका जिनकी दिलजोई मंज़ूर है और गुलामों (के आज़ाद करने) में और क़र्ज़दारों के क़र्ज़ चुकाने में और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफ़िर (की ज़रूरत) में (इसको ख़र्च किया जाए) अल्लाह की तरफ़ से तय शुदा और अल्लाह ख़ूब जानता और बड़ी हिकमत रखता है।" (सूरह तौबाः 60)

इस आयत–ए–करीमा में अल्लाह तआला ने ज़कात के आठ मसारिफ़ का ज़िक्र किया है, उनकी तफ़सील नीचे दी जा रही हैं:

1. **फ़ुक़राः** फ़क़ीर की जमा है, जिसके पास माल हो, लेकिन निसाब से कम हो, या माल निसाब तक पहुंच तो रहा हो, लेकिन या तो निसाब (बढ़ने वाला) न हो या हाजत–ए–अस्लिया में लगा हुआ हो।

2. **मसाकीनः** यह मिस्कीन की जमा है, जिसके पास कुछ माल भी न हो ?

3. **आमिलीनः** आमिल की जमा है, जिसको मुसलमान हाकिम ने ज़कात वग़ैरह की वसूली के लिए मुकर्रर किया हो। यह मालदार हो तब भी उसे किफ़ायत के बक़द्र ज़कात के माल से दिया जा सकता है, हिन्दुस्तान में यह मसरफ़ भी ज़ाहिर है नहीं पाया जाता, इसलिए फ़ुक़्हा ने इसे मदरसों के सफ़ीरों को इसमें शामिल नहीं किया है।

4. **मुअल्लिफ़ः क़ुलूबः** तरजुमा गुज़र चुका है कि जिनको दिलजोई के लिए दिया जाए। अबूबक्र जसास राज़ी ने आयातुल एहकाम में बयान किया है कि यह तीन तरह के लोग थे, कुछ वह काफ़िर थे जिनके शर से बचने के लिए दिया जाता था, कुछ वह थे जिनको इस्लाम की तरफ़ माएल करने के लिए दिया जाता था और कुछ नए–नए मुसलमान थे जिनको इस्लाम पर साबित क़दम रखने के लिए दिया जाता था। फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) के ज़माना–ए–ख़िलाफ़त में हज़रत उमर के मशविरे से इस मसरफ़ पर देने की ज़रूरत नहीं समझी गयी, इसलिए कि इस मसरफ़ की अस्ल रूह यह थी कि उनको देकर इस्लाम को मज़बूत किया जाए, लेकिन हज़रत उमर (रज़ि0) ने फ़रमाया कि अब इस्लाम को क़ूव्वत हासिल हो गयी है, लिहाज़ा इस मद पर ख़र्च करने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही है। सहाबा (रज़ि0) इस पर ख़ामोश रहे (इसीलिए कुछ उलमा की राय है कि हिन्दुस्तान जैसे मुल्क में इस्लाम फिर कमज़ोर है, लिहाज़ा इस मद में मौजूदा हालात में ज़कात देने की इजाज़त होनी चाहिए)

(आयातुल एहकाम)

5. **रक़ाबः** रक़बा की जमा है, इससे गुलाम के माने लिये जाते थे और अहनाफ़ के नज़दीक यहां मकातिब वह गुलाम मुराद हैं जिनसे उनके आक़ा ने मुआहिदा कर लिया हो कि तय रक़म अदा करने पर वह आज़ाद हैं, तो उन मकातिब गुलामों को भी ज़कात दी जा सकती है ताकि वह अपने आप को आज़ाद करवा सकें, ज़ाहिर है कि अब न गुलाम हैं न मकातिब, इसीलिए यह मसरफ़ भी मौजूद नहीं है।

6. **ग़ारमीनः** ग़ारिम की जमा है, जिसके माने क़र्ज़दार के होते हैं। यानि कोई शख़्स कर्ज़दार हो, तो

अगर उसके पास माल हो, लेकिन कर्ज़ा इतना ज़्यादा हो कि अदायगी के बाद माल बिल्कुल नहीं बचेगा, या निसाब के बराबर नहीं बचेगा तो उसको ज़कात दी जा सकती है।

7. फ़ी सबीलिल्लाहः लफ़्ज़ी माने अल्लाह के रास्ते में और सही क़ौल के मुताबिक़ इससे वह ग़ाज़ी और मुजाहिद मुराद हैं जो माली बेसर व सामानी की वजह से इस्लामी लश्कर से बिछड़ गए हों, लेकिन उनको देना तभी जाएज़ होगा जब वह नादार और ग़रीब हों।

8. इब्नुस्सबीलः वह मुसाफ़िर जो सफ़र के दौरान हाजतमन्द हो जाएं, उनको भी ज़कात देना जाएज़ है, चाहे अपने वतन में मालदार हों, लेकिन फ़िलहाल वहां मंगवा पाना दुश्वार हो। (शामीः 2/64–67)

ज़कात का मुस्तहिक़ सिर्फ़ मुसलमान है

इन असनाफ़ में से ज़कात देने वाला किसी एक सनफ़ को भी ज़कात दे सकता है और चाहे तो तमाम अस्नाफ़ पर ख़र्च करे, लेकिन ज़कात देने के लिए शर्त यह है कि सिर्फ़ मुसलमान को देने से अदा होती है, ग़ैरमुस्लिम चाहे मोहताज ही क्यों न हो उसको ज़कात देने से अदा नहीं होगी, अलबत्ता उसकी मदद नफ़्ली सदक़ात से की जा सकती है। इसलिए कि हज़रत मआज़ (रज़ि0) की हदीस में ज़कात के बारे में आया है कि "वह मालदार मुसलमानों से ली जाएगी और फ़क़ीर मुसलमानों को दी जाएगी।"

(बुख़ारीः 1395, मुस्लिमः 31, शामीः 2/68–73)

नियत ज़रूरी है

कोई भी इबादत नियत के बग़ैर सही नहीं होती और चूंकि ज़कात भी एक इबादत है, लिहाज़ा फ़क़ीर को देते वक़्त नियत करना ज़रूरी है, अलबत्ता अगर ज़कात का हिसाब करके ज़कात की रक़म ज़कात की नियत से अलग रख ली तो अब अगर मुस्तहिक़ या मुस्तहिक़ के वकील (मदरसा वग़ैरह के सफ़ीर) को देते वक़्त नियत न भी करे तब भी अदायगी हो जाएगी।

और अगर देते वक़्त ज़कात की नियत नहीं थी, बाद में ख़्याल आया कि इसमें ज़कात की नियत कर लेनी चाहिए तो अगर ज़कात का माल फ़क़ीर ने ख़र्च नहीं किया है, या ज़ाया नहीं हुआ है तो ज़कात की नियत की जा सकती है, वरना नहीं।

(हिन्दियाः 1/171)

किन लोगों को ज़कात देना जाएज़ नहीं

नीचे दिये गए अफ़राद मोहताज हों तब भी उनको ज़कात देना जाएज़ नहीं हैः

1. अपने उसूलः जैसे बाप, दादा, परदादा, मां, नाना, नानी, दादी ऊपर तक।
2. अपने फ़ुरूअः लड़के, लड़कियां, पोते पोतियां, नवासे नवासियां नीचे तक।
3. अपनी बीवी या अपने शौहर
4. काफ़िर
5. साहिबे निसाब मालदार और उसके बच्चे
6. बनू हाशिमः इसलिए कि हदीस शरीफ़ में आया है किः "हम आले मुहम्मद के लिए ज़कात हलाल नहीं है।" (मुस्लिमः 1069)

और बनूहाशिम से मुराद यह पांच ख़ानदान हैंः

1. हज़रत अली (रज़ि0) की औलाद
2. हज़रत अब्बास (रज़ि0) की औलाद
3. हज़रत जाफ़र (रज़ि0) की औलाद
4. हज़रत अक़ील (रज़ि0) की औलाद
5. हज़रत हारिस (रज़ि0) की औलाद

यह शर्फ़ अबू लहब की औलाद को हासिल नहीं है। (बदाएः 2/162)

मस्जिद और रिफ़ाही कामों में ज़कात की अदायगी जाएज़ नहीं

ज़कात उसी वक़्त अदा होती है जब मुस्तहिक़ को बाक़ायदा मालिक बना दिया जाए। इसी वजह से ज़कात की रक़म को मस्जिद में लगाना या उससे रिफ़ाही काम करना जैसे रास्ता या नाली वग़ैरह दुरुस्त कराना, या उससे मैय्यत की तजहीज़–तकफ़ीन करना जाएज़ नहीं है। अगर सख़्त ज़रूरत हो तो किसी ग़रीब को ज़कात की रक़म दे दी जाए और वह तजहीज़–तकफ़ीन वग़ैरह में ख़र्च करे।

(हिन्दियाः 1/188, शामीः 2/68–69)

अज़ीज़ व अक़ारिब को ज़कात देना

ऊपर ज़िक्र किया गया है कि उसूल व फ़ुरूअ और ज़ौजेन का आपस में एक दूसरे को ज़कात देना नाजाएज़ है, बक़िया अज़ीज़ व अक़ारिब जैसे फूफी, सौतेली मां, वग़ैरह ..... (शेष पेज नम्बर 16 पर)

बढ़ती आबादी एवं कुदरती वसाएल

मुहम्मद फ़य्याज़ आलम क़ासमी

हमारा अक़ीदा है कि पूरी कायनात का ख़ालिक़ व मालिक और उसे चलाने वाला अल्लाह तआला की ज़ात है जो अपनी हिकमत और मस्लहत के साथ पूरे निज़ाम को कन्ट्रोल कर रहा है। सारे इन्सान उसी ने पैदा किए हैं और ज़मीन में उनके लिए खुराक़ भी उसी ने मुहैया की है। उसे इन्सानों की ज़रूरतों और ज़मीन में खुराक़ के खज़ानों का पूरा इल्म है। वह इन्सानों की ज़रूरतों से ग़ाफ़िल नहीं है और न ही आबादी और ख़ूराक़ के ज़खीरे में तवाज़ुन क़ायम रखना उसके बस से बाहर है। उसने हर जानदार की ख़ूराक़ का वादा कर रखा है और उसके वादे के मुताबिक़ वह ख़ुराक़ और दूसरी ज़रूरतें पूरी कर रहा है। कुरआन करीम की सूरह हूद की आयत नम्बर 60 में अल्लाह तआला का इरशाद हैः (अनुवाद) "ज़मीन में चलने वाला ऐसा कोई जानदार नहीं है, जिसका रिज़्क़ अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे न ले रखा हो। वह हर जानदार के आरज़ी और मुस्तक़िल ठिकाने को जानता है और यह सबकुछ रिकार्ड में मौजूद है।"

अल्लाह तआला ने इस कायनात के अन्दर तक़सीमे रिज़्क़ का जो निज़ाम बना रखा है उसमें उसने हर जानदार के लिए उसकी ज़रूरियाते जिन्दगी फ़राहम कर दी है। इस आयत के तहत हज़रत मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी दामत बरकातुहुम अपनी मायानाज़ आसान तफ़सीरे कुरआन में लिखते हैंः

अल्लाह तआला अपनी तमाम मख़लूक़ात के लिए रिज़्क़ का इन्तिज़ाम फ़रमाते हैं। थॉमस राबर्ट माल्थस ने 1898ई0 में अपना नज़रिया पेश किया था कि दुनिया की बढ़ती हुई आबादी के एतबार से तीस साल के अर्से के बाद दुनिया में खाने–पीने के वसाएल ख़त्म हो जाएंगे और लोगों के भूखे मरने की नौबत आ जाएगी और उसके सौ साल बाद 1998ई0 में सर विलियम क्रोकस ने तो चेंज किया था कि सिर्फ़ तीस साल तक ही मौजूदा वसाएल हमारी ज़रूरियात पूरी कर सकेंगे लेकिन अमली सूरतेहाल यह है कि आज आबादी के कई गुना ज़्यादा हो जाने के बावजूद ज़रई पैदावार से लेकर मुर्ग़ी, अण्डे और मछलियां वग़ैरह तक तमाम ज़रूरियाते ज़िन्दगी इतनी वाफ़िर मेक़दार में मौजूद हैं कि माज़ी में इनका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था और सिनअती पैदावार ने इन्सान को जो सहूलतें मुहैया की हैं, उनका तो कोई शुमार व हिसाब ही नहीं, यह सबकुछ कुरआन मजीद के उस बयान की अमली तस्दीक़ है कि जैसे जैसे अल्लाह की मख़लूक़ में इज़ाफ़ा होगा वसाएल में भी इज़ाफ़ा होता चला जाएगा। (आसान तफ़सीरे कुरआन तहत सूरह हूद)

इसलिए मसला इन्सानी आबादी में इज़ाफ़े का नहीं है बल्कि अस्ल मसले दो हैंः

1. ज़मीन में मौजूद ख़ुराक़ के ज़खीरे तक रसाई किस तरह हो?
2. उनकी तक़सीम का क्या निज़ाम हो?

यह दो बातें अल्लाह तआला ने इन्सान के ज़िम्मे की हैं और इन्हें इन्सान की अक़्ल और दयानत की आज़माइश ठहराया है और बदक़िस्मती से यहीं गड़बड़ होती है। इसलिए हमें ठण्डे दिल व दिमाग़ के साथ इनका जाएज़ा लेने की ज़रूरत है।

इसकी मिसाल ऐसे ही है जैसे किसी फ़लाही मुमलकत में हर कुन्बे को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ उसको वज़ीफ़ा दिया जाता हो और पन्द्रह–बीस लोगों में से किसी एक को उनका सरबराह बनाया जाता हो। और उनको अथारिटी दी जाए कि वह अपने कुन्बे के अफ़राद की ज़रूरियात के लिए इतनी रक़म सरकारी खज़ाने से ले सकता है। पर वह रक़म वसूल करने में या तो लापरवाही करता हो या वहां से वसूल तो कर लेता हो लेकिन मुताल्लक़ा लोगों पर ख़र्च करने के

बजाए ज़ाती ऐश व इशरत पर ज़ाया कर देता हो तो उस कुन्बे के अफ़राद को खुराक़ व लिबास और दूसरी ज़रूरतें न मिलने की ज़िम्मेदारी उस फ़लाही रियासत पर नहीं होगी बल्कि कुन्बे का सरबराह मुजरिम होगा। क्योंकि उसने रक़म वसूल न करके या वसूली की सूरत में बेजा इस्तेमाल करके अपने कुन्बे से अफ़राद को भूख़, नादारी और गरीबी से दोचार कर दिया है।

इसी तरह आज अगर दुनिया में करोड़ो इन्सान भूख और फ़ाक़े का शिकार है और बहुत से देश अपनी अवाम को बुनियादी ज़रूरतें मुहैया करने से क़ासिर हैं तो इसका कुसूरवार वह निज़ाम और सिस्टम है जिसने इन्सानी बर्बादी का आलमी सतह पर चौधराहट संभाल रखी है। और जिसने खुराक़ के ज़खीरे और दुनिया के माली वसाएल पर इजारादारी क़ायम कर रखी है और उनकी तक़सीम के तमाम अख़्तियार अपने हाथ में रखे हैं यह उसी का करिश्मा है कि एक तरफ़ अमरीका गेहूं का एक बहुत बड़ा हिस्सा ज़रूरत से ज़्यादा क़रार देकर समन्दर में फेंक देता है और बर्तानिया में मार्केट की क़ीमतों में बैलेंस रखने के लिए कुछ ज़मीनदारों को गेहूं की खेती करने से रोक दिया जाता है तो दूसरी हुकूमत ग़रीब मोमालिक में लाखों इन्सान भूख से मर जाते हैं। एक तरफ़ अमीरों की दौलत में बेतहाशा इज़ाफ़ा हो रहा है और दूसरी तरफ़ ग़रीबों की ग़रीबी इससे दुगनी रफ़्तार से बढ़ रही है।

ख़ुद हमारे देश में एक तरफ़ कुछ लोग व ख़ानदान हैं जिनके कुत्ते मक्खन और पनीर खाते हैं और दूसरी तरफ़ करोड़ों ग़रीब अवाम है जिनको दो वक़्त सादी रोटी भी नहीं मिलती। ग़रीबी का मसला क़ौमी सतह पर हो या आलमी सतह पर। दोनों जगह ख़राबी की अस्ल वजह तक़सीम का निज़ाम है और वह ख़ुदगर्ज़ तबक़े व क़ौमें इसकी ज़िम्मेदार हैं जो अपनी अय्याशी और लक्ज़री के लिए ग़रीब अवाम व तबक़ात का इस्तहसाल कर रही हैं और करोड़ों भूखे और फ़ाकेकश इन्सानों के मुंह से निवाले छीनकर अपनी तिजोरियां भर रही हैं।

इस्लाम का निज़ाम यह है कि दौलत सिर्फ़ मालदारों के दरमियान में घूमती फिरती न रहे बल्कि ज़रूरत मन्दों तक भी पहुंचे।

इसी वजह से शरीअत में ज़कात और उश्र को वाजिब क़रार दिया गया है। बहुत से गुनाहों की सज़ा कफ़्फ़ारा तय किये गए हैं। सदक़ात व ख़ैरात की तरग़ीब दी गयी है। इनका अव्वलीन मसरफ़ ग़रीब और मोहताज को बनाया गया है। सदक़ात व ख़ैरात और ज़कात के मुस्तहिक़ ग़रीब फ़क़ीर और मिस्कीन हैं। इसलिए कुदरती ज़ख़ीरों की मौजूदा तक़सीम को बदलना होगा। ज़मीन के वसाएल पर तमाम इन्सानों का समान हक़ देने की ज़रूरत है न कि इन्सानी आबादी का कन्ट्रोल करने की।

शेषः उश्र व ज़कात के मसारिफ़

अगर मोहताज हों तो न सिर्फ़ यह कि उनको ज़कात देना जाएज़ है, बल्कि उसमें तिरमिज़ी की हदीस के मुताबिक़ दुगना सवाब है, एक सदक़ा करने का अज्र, दूसरे सिलारहमी का अज्र।

(तिर्मिज़ी, अबवाबुज़्ज़कातः 658, हिन्दियाः 1/190)

ज़कात की रक़म से कोई और चीज़ तैयार करके देना

ज़कात की रक़म से ग़रीबों और मुस्तहिक़ो के लिए मकान तैयार करके उनको मालिक बना देना, या ग़रीबों को ज़कात की रक़म से कपड़े या किताबें या उनकी ज़रूरत की कोई और चीज़ ख़रीद कर देना या किसी ग़रीब लड़की की शादी में ज़कात की रक़म से कोई सामान ख़रीद कर देना जाएज़ है।

(शामीः 2/24)

क़र्ज़दार का क़र्ज़ माफ़ करना

क़र्ज़दार का क़र्ज़ माफ़ करने से ज़कात अदा नहीं होगी, चाहे वह मोहताज ही क्यों न हो, अलबत्ता यह किया जा सकता है कि ज़कात की रक़म उसके हवाले कर दी जाए, फिर अपना क़र्ज़ उसूल लिया जाए।

(शामीः 2/13)

ज़कात की रक़म शहर से दूसरे शहर भेजना

बेहतर है कि ज़कात की रक़म अपने शहर के मुस्तहिक़ों पर ख़र्च करें, लेकिन अगर दूसरे शहर में अइज़्ज़ा हों या ज़रूरत मंद मदरसे हों तो मुन्तक़िल करना जाएज़ बल्कि ज़्यादा बाइसे अज्र होगा।

(हिन्दियाः 1/190)

सेक्यूलरिज़्म

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

"The belief that religion should not be involved with the ordinary social activities and political activities of a country."

कैम्ब्रिज इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसारः "देश के राजनीतिक व सामाजिक मामलों में धर्म को सम्मिलित न करने का नाम धर्मनिरपेक्षता (सेक्यूलरिज़्म) है।"

सेक्यूलरिज़्म का आरम्भिक अर्थ "चर्च तथा ईसाई धर्म से आज़ादी" का था। चौदहवीं शताब्दी में पहली बार यह शब्द फ़्रांस में प्रयोग हुआ। इसके परिदृष्य में "पवित्र रोमन साम्राज्य" की वह तीस साल की भयानक जंग है जो धार्मिक आधारों पर लड़ी गयी। यह युद्ध 1618ई0 से 1648ई0 तक लगातार तीस साल जारी रहा, जिसे "Thirty Years' War" भी कहा जाता है। इस युद्ध में जर्मनी की लगभग आधी आबादी समाप्त हो गयी थी। इस भयंकर युद्ध के पीछे ईसाईयों के दो धार्मिक वर्ग कैथोलिक तथा प्रोटेस्टैंट के हित सम्मिलित थे। दोनों अपनी सीमाओं तथा अपने अधिकार क्षेत्र को बढ़ाना चाहते थे। इस युद्ध में कम से कम अस्सी लाख लोग मारे गए थे। भुखमरी तथा विभिन्न प्रकार की बीमारियों में मौत का सिलसिला बाद में भी जारी रहा। इस प्रकार यह यूरोप के इतिहास का सबसे ख़तरनाक युद्ध माना जाता है।

इस भयानक युद्ध ने यूरोप को बुरी तरह से खोखला कर दिया था, क्योंकि इस युद्ध का आधार धार्मिक वर्चस्व था, इसलिए धर्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठना स्वभाविक था। अतः पूरे यूरोप में धार्मिक उदासीनता की एक लहर चल पड़ी और लोगों ने खुद को चर्च तथा ईसाईयत दोनों की गुलामी से आज़ाद करना शुरू किया जिसे पश्चिमी बुद्धिजीवियों ने "सेक्यूलरिज़्म" अर्थात धर्मनिरपेक्षता का नाम दिया।

सेक्यूलरिज़्म या दूसरे शब्दों में चर्च तथा धर्म से उदासीनता ने जल्द ही एक आंदोलन का रूप ले लिया। क्योंकि यह यूरोप के पुनर्जागरण (Renaissance) का समय था। चर्च के ख़िलाफ़ सार्वजनिक विद्रोह शुरू हो चुका था। सत्ता पर से चर्च की पकड़ ढ़ीली हो रही थी। इसके क़ब्ज़े से ज़मीनें खिसकने लगीं थीं। सेक्यूलरिज़्म ने एक आंदोलन के रूप में शासन को चर्च से स्वतन्त्र कराने का मिशन आरम्भ किया जिसकी शुरूआत फ्रांस से हुई और फिर धीरे–धीरे पूरा यूरोप इस आंदोलन में शामिल हो गया। सेक्यूलरिज़्म का आरम्भिक अर्थ चर्च के ख़िलाफ़ विद्रोह ही था लेकिन जैसे–जैसे इसमें तीव्रता आती इसका अर्थ और भी कठोर होता गया और फिर समझ से परे हर धार्मिक बात को सेक्यूलरिज़्म के ख़िलाफ़ समझा जाने लगा।

सेक्यूलरिज़्म का विचार पश्चिम की विभिन्न दिशाओं से अपने विकास की यात्राएं तय करता रहा लेकिन इस शब्द का विशेष प्रचलन हुआ जब 1851ई0 को इंग्लैण्ड में एक पश्चिमी रूढ़िवादी नास्तिक जार्ज ह्यूल्यूक (George Jacob Holyoake) ने इसी नाम से एक आंदोलन की शुरूआत की। ह्यूल्यूक ने इस आंदोलन को प्रभावी बनाने के लिए इसके नए अर्थों तथा तर्कों का निर्माण किया। उसने स्वतन्त्र विचार (Free Thought) तथा अधर्म (Atheism) को धर्मरिनपेक्षता के शब्द से परिचित कराया। इस प्रकार यह आंदोलन यूरोप में परवान चढ़ा तथा ह्यूल्यूक धर्मनिरपेक्षता का कर्ता–धर्ता बन गया।

धर्मनिरपेक्षता के आंदोलन की जड़ों में धर्म का इनकार शामिल नहीं था अर्थात ह्यूल्यूक ने धर्मनिरपेक्षता तथा धर्म को एक दूसरे का दुश्मन नहीं घोषित किया लेकिन यह आंदोलन धर्म के मामले में अपने रुझानों पर स्थिर न रह सका तथा बाद में आने वाले सेक्यूलर विचारकों ने धर्मनिरपेक्षता तथा धर्म को एक–दूसरे का दुश्मन घोषित कर दिया। धर्म से संबंधित ऐसे कट्टरवादी विचारों को "एक्सट्रीम सेक्यूलरिज़्म" कहा जाता है जबकि दूसरे प्रकार के विचारों को "सॉफ़्ट

सेक्यूलरिज़्म" कहते हैं अर्थात ऐसे विचार जिनमें धर्म के संबंध से नर्मी पायी जाती है।

सेक्यूलरिज़्म को वैचारिक शक्ति प्रदान करने में पश्चिम के विभिन्न विचारकों तथा बुद्धिजीवियों के विचारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है जिनमें डार्विन की "थ्योरी ऑफ़ एव्यूलूशन" कार्ल मार्क्स के "कम्यूनिज़्म" डेस्काट्र्स की "थ्योरी ऑफ़ रेशनलिज़्म" जान पॉल सार्तर की "थ्योरी ऑफ़ एक्सिस्टेंशलिज़्म" ऐडम स्मिथ की "कैप्टलिज़्म" विशेष रूप से चर्चा योग्य हैं। इनके अलावा मुस्लिम शासकों तथा बुद्धिजीवियों में कमाल अता तुर्क, ताहा हुसैन, जमाल अब्दुल नासिर, अनवर सादात, अली पाशा, सर सैय्यद अहमद ख़ां, चिराग़ अली, इनायत अली, इनायत उल्लाह मश्रिक़ी, गुलाम परवेज़, गुलाम क़ादियानी इत्यादि ने भी सेक्यूलरिज़्म की बुनियादों को मज़बूत करने का बेड़ा उठाया।

पुराने ज़माने में विभिन्न धर्मों के पेशवा तथा क़ौम के बुद्धिजीवियों ने मानवीय समस्याओं में चिन्तन–मनन, विचार–विमर्श तथा उन्नति की राह को हमवार करने वाली नई खोजों तथा नए साधनों को अपनाने में रुकावट डाल रखी थी। उन धर्मों को किसी भी हुकूमत व शासन से अधिक ताक़त तथा अधिकार प्राप्त थे। उन धर्मों में यूरोप में ईसाईयत, यहूदियत, यूनान के कट्टरवादियों के दर्शन तथा फिर एशिया में हिन्दुमत, बौद्ध धर्म तथा कुछ मुस्लिम शासक भी शामिल हैं जिनकी अदूरदर्शिता ने जनता को धर्म से दूर किया जिसके फलस्वरूप धर्मनिरपेक्षता को बढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ।

सेक्यूलरिज़्म के बढ़ावे में धार्मिक वर्चस्व के अतिरिक्त जिन दूसरे कारणों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है उनमें राष्ट्रवाद सबसे ऊपर है। धर्म ने जहां स्त्री–पुरुष, अल्पसंख्यकों तथा दैनिक जीवन में वर्ग विभाजन कर रखा था वहीं क्षेत्रीय, जातीय तथा भाषायी पहचान ने इस बात पर लोगों को उभारा कि ऐसे शासन की स्थापना की जा सके जहां अपने लोगों को हर प्रकार की स्वतन्त्रता तथा उन्नति के अवसर उपलब्ध हो सकें। इस दौड़ में जर्मनी, फ़्रांस, तुर्की, अरब देश, अफ़्रीक़ा, अमेरिका, चीन, रूस, जापान इत्यादि लगभग दुनिया के हर राष्ट्र ने अपना अलग देश बनाया और दूसरी क़ौमों की मांग अभी भी जारी है।

उन्नीसवीं सदी के बाद से धर्मनिरपेक्षता यूरोप में फलने–फूलने लगी तथा उसके विस्तार ने हर प्रकार की जीवन व्यवस्था पर गहरे प्रभाव डाले तथा मानवीय जीवन के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा राजनीतिक वर्गों का नवनिर्माण इस प्रकार हुआ कि उनमें धर्म के लिए कोई जगह न थी। सामूहिक कार्यों से धर्म को बेदख़ल करके निजी जीवन तक सीमित कर दिया गया। यूरोप में इस बदलाव के दूरगामी प्रभाव पड़े। अतः जहां धर्मनिरपेक्षता से पहले समाज में धार्मिक शिक्षा के प्रभाव के कारण लाज–शर्म का पास–लिहाज़ किया जाता था, पारिवारिक व्यवस्था शक्तिशाली आधारों पर स्थिर थी लेकिन धर्मनिरपेक्ष सामाजिक व्यवस्था में यह मानवीय मूल्य समाप्त हो गए। समाज से शर्म व हया समाप्त हो गयी, पारिवारिक व्यवस्था बिखर गयी तथा अश्लीलता का एक ऐसा सैलाब उमड़ पड़ा कि पूरा समाज विभिन्न प्रकार के जुर्म तथा विभिन्न प्रकार की बीमारियों का शिकार हो गया।

पश्चिमी साम्राज्य के साथ–साथ विभिन्न देशों में धर्मनिरपेक्षता की जड़ें भी गहरी होती चली गयीं। लेकिन जब साम्राज्यवाद के पंजे से मुस्लिम देश आज़ाद होने लगे तो पश्चिमी ताक़तों ने वैचारिक स्वतन्त्रता, मानवाधिकार तथा समानता के दिलकश नारों के द्वारा उन देशों पर धर्मनिरपेक्षता को थोपने की कोशिश की जिसका सबसे सफल परिणाम तुर्की में आया जिसने पश्चिमी ताक़तों के हौसले बुलन्द कर दिए।

सेक्यूलरिज़्म का उद्देश्य मुसलमानों में से धार्मिक जागरुकता को ख़त्म करके भौतिकता के उस दलदल में फंसाना है जिसमें पूरा यूरोप गले तक डूबा हुआ है। लेकिन यह बात स्वाभाविक रूप से कही जा सकती है कि मुसलमान कभी भी धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार नहीं करेगा। इसका पूरा अस्तित्व उसका विरोध करता रहेगा तथा पूरी ताक़त से इसको रद्द करता रहेगा। यही कारण है कि सेक्यूलर ताक़तों और मुसलमानों के बीच एक कशमकश जारी है जो कभी धीमी पड़ जाती है और कभी तेज़ हो जाती है, लेकिन लगातार जारी रहती है।

राम राज्य का क़ाफ़िला कहाँ रुकेगा?

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

जिस समय बाबरी मस्जिद दिन–दहाड़े शहीद की जा रही थी उस समय ''तथाकथित रामभक्तों'' की ज़बान पर यह नारा भी था ''अयोध्या तो केवल झांकी हैं – काशी मथुरा बाक़ी है।''

भारत में संघ परिवार की स्थापना जिन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु की गयी थी उनमें ''राम राज्य'' का तथाकथित विषय भी शामिल था। ज़ाहिरी रूप राम राज्य से आशय एक ऐसे शासन का विचार है जहां न्याय व शांति का बोलबाला होगा तथा किसी भी प्रकार की धार्मिक नफ़रत के बिना अमन व शांति का वातावरण स्थातिप किया जाएगा, लेकिन जिस प्रकार दलितों तथा अल्पसंख्यकों को दुत्कारा जाता है, उन्हें मूलभूत मानवीय अधिकारों से भी वंचित किया जाता है तथा जिस प्रकार मुसलमानों की धार्मिक पहचान तथा उनके धर्मस्थलों को निशाना बनाया जा रहा है उससे साफ़ ज़ाहिर है कि उससे साफ़ ज़ाहिर है कि राम राज्य केवल एक राजनीतिक विषय है तथा इसका उद्देश्य सत्ता की कुर्सी पर एक वर्ग विशेष की पकड़!

संघ परिवार ने लगभग एक सदी पहले जिस ''राम राज्य'' का सफ़र शुरू किया था उसमें नफ़रत तथा पक्षपात एंव साम्प्रदायिकता के छोटे–बड़े पड़ाव के बाद पहली मंज़िल बाबरी मस्जिद की शहादत थी। साधारण हिन्दुओं को यह समझाया गया कि उनके भगवान राम जहां पैदा हुए थे उसी जगह पर मस्जिद का निर्माण किया गया है, इसलिए मस्जिद को हटाकर उसकी जगह ''राम मन्दिर'' का निर्माण हर हिन्दु के दिल की पुकार है। फिर इसी विचार को आधार बनाकर पूरे देश में राजनीति की गयी तथा इसी ''आस्था'' के आधार पर अदालतों के फ़ैसले आए। आश्चर्यजनक बात तो यह है कि अदालत ने यह स्वीकार किया कि बाबरी मस्जिद की जगह पर किसी भी मन्दिर के अवशेष नहीं पाए गए और मस्जिद की शहादत एक गंभीर अपराध था फिर भी हिन्दुओं की ''आस्था'' के मद्देनज़र मस्जिद की जगह ''राम मन्दिर'' के लिए दे दी गयी तथा आरोपियों को आज़ाद भी कर दिया गया।

हिन्दु धर्म के अनुसार राम (अयोध्या) कृष्ण (मथुरा) तथा शिव (काशी) यह तीनों भगवान उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। इसलिए इन तीनों की जन्मस्थली उनके निकट सम्मानित हैं, लेकिन आश्चर्यजनक बात यह है कि उनके पास अपने इस दावे की कोई दलील नहीं है तथा उन तीनों जगहों का संबंध जिन ज़मीनों की ओर स्थापित किया जाता है वहां पर मुसलमानों के बड़े धर्मस्थल स्थापित हैं।

1991ई0 में सरकार ने धर्मस्थलों से संबंधित यह क़ानून ष्प्सबे व ित्वतीपच ।बजष पास किया था कि 15/अगस्त 1947ई0 में जो धर्मस्थल जिस रूप में था वह उसी हैसियत में बाक़ी रहेगा, अतः बाबरी मस्जिद–राम जन्मभूमि मुक़द्दमे में सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले के बाद यह उम्मीद थी कि अब किसी दूसरी मस्जिद या धर्मस्थल के साथ छेड़छाड़ नहीं की जाएगी, यद्यपि इस क़ानून में बाबरी मस्जिद अपवाद थी, जिसका पूरा फ़ायदा ''कारसेवकों'' ने उठाया। बाबरी मस्जिद की शहादत और फिर पूरे देश में साम्प्रदायिक दंगों ने यह साबित कर दिया कि ''राम राज्य'' एक ऐसा राजनीतिक विषय है जिसे साम्प्रदायिक संगठन अपने लाभ हेतु इस्तेमार कर रहे हैं।

हिन्दुओं का आधारहीन दावा है कि 1669ई0 में मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर ने मथुरा में मौजूद कृष्ण मन्दिर को तोड़कर उसकी जगह शाही ईदगाह मस्जिद का निर्माण कराया था, अतः इस पूरे अहाते (37. 13/एकड़) का मालिकाना हक़ उनको ही मिलना चाहिए। इसी आस्था के आधार पर लगभग डेढ़ सौ साल पहले हिन्दुओं ने मस्जिद से मिली हुए एक भव्य मन्दिर का निर्माण भी किया, फिर देश के कोने–कोने से इसके दर्शन का सिलसिला शुरू हो गया।

1960ई0 में साम्प्रदायिक तनाव ने जन्म लिया तथा मथुरा का माहौल ख़राब होने लगा। दोनों पक्षों को जान–माल का नुक़सान होने लगा। शहर में बदअमनी का

वातावरण बनने लगा जिसका प्रभाव देश के दूसरे क्षेत्रों में भी महसूस किया जाने लगा। अन्ततः 1968ई0 को शाही ईदगाह मस्जिद इन्तिज़ामिया कमेटी और ''श्री कृष्ण जन्म स्थान सेवा संस्थान'' के बीच एक समझौता हुआ जिसमें दोनों पक्षों ने अपने मुक़द्दमें वापस लिए तथा मस्जिद व मन्दिर की जगह तय कर दी गयी। इस प्रकार एक बार फिर अमन व शांति का वातावरण स्थापित हो गया।

लेकिन जिस दिन (30/सितम्बर) को लखनऊ सीबीआई अदालत ने बाबरी मस्जिद के आरोपियों को बरी किया था उसी दिन मथुरा ज़िला न्यायालय में मथुरा की शाही ईदगाह की मस्जिद का विवाद खड़ा कर दिया गया। कट्टरपंथी संस्था ''अखिल भारतीय हिन्दु महासभा'' ने यह घोषणा कर दी कि मथुरा की शाही ईदगाह मस्जिद वास्तव में भगवान कृष्ण की जन्मभूमि है, इसलिए छः दिसम्बर (बाबरी मस्जिद के शहादत के दिन) को वहां महाजलाभिषेक का आयोजन होगा तदोपरान्त भगवान कृष्ण की मूर्ति उनके जन्म स्थान पर लगायी जाएगी। उसके बाद एक दूसरी नारायणी सेना नामक कट्टरपंथी संस्था ने भी यह घोषणा कर दी कि वह जमुना के विश्राम घाट से श्रीकृष्ण जन्मस्थान अर्थात ईदगाह तक एक संकल्प यात्रा निकालेगी। इन संस्थाओं के अतिरिक्त भारतीय जनता पार्टी के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के बयान ने भी माहौल और गरम कर दिया। उन्होंने अपने एक ट्वीट में कहा कि ''अयोध्या–काशी में भव्य मन्दिर के निर्माण का कार्य जारी है, मथुरा की तैयारी है।''

इन घोषणाओं के बाद यद्यपि प्रशासन ने चौकसी का प्रदर्शन किया और हालात को कन्ट्रोल करने का दावा भी किया लेकिन वास्तविकता यह है कि मथुरा के वातावरण में नफ़रत का ज़हर घुल गया तथा उसका असर सड़कों व बाज़ारों से होता हुआ पूरे राज्य में फैल गया।

मथुरा की तरह बनारस में भी गंगा किनारे विश्वनाथ मंदिर से जुड़ी हुई सदियों पुरानी ज्ञानव्यापी मस्जिद भी चरमपंथियों के निशाने पर है। पिछली कई सदियों से मन्दिर और मस्जिद दोनों एक साथ स्थापित हैं, लेकिन जबसे राम राज्य का क़ाफ़िला हरकत में आया है, यहां की गंगा–जमुनी सभ्यता ख़तरे में है, तथा पूरी शिद्दत के साथ इस मस्जिद को भी ढ़हाने की भी योजना बनायी जा रही है।

संघ वालों का दावा है कि पूरे देश में लगभग तीन हज़ार मस्जिदें ऐसी हैं जो मुग़लों ने मन्दिर तोड़ कर बनवायी थीं तथा यह मस्जिदें गुलामी का प्रतीक हैं जो उन्हें गुलामी की याद दिलाती हैं इसलिए गुलामी के उन प्रतीकों को मिटाना ज़रूरी है। इन मस्जिदों में दिल्ली की जामा मस्जिद और मस्जिद कूव्वतुल इस्लाम और लखनऊ की टीले वाली मस्जिद पर पहले ही से मुक़द्दमे चल रहे हैं।

चुनाव के क़रीब आते ही विभिन्न मस्जिदों पर कार्यवाही की मांग बढ़ जाती है तथा राम राज्य का नारा ज़ोर–शोर से गूंजने लगता है।

राम राज्य का यह क़ाफ़िला नफ़रत तथा पक्षपात के जिस रास्ते से गुज़र रहा है वहां केवल मस्जिदें या उनकी अज़ानें ही निशाने पर नहीं हैं बल्कि राजनीतिक बिसात पर मोहरें बदलती रहती हैं अतः मस्जिद का मामला जब कुछ ठहरने लगता है तो दूसरे विषयों को खड़ा कर दिया जाता है। फिर कभी गोहत्या के नाम पर मॉब लिंचिंग होती है, कभी वंदे मातरम के संदर्भ से देश से ग़द्दारी करने का आरोप लगाया जाता है, कभी 'जय श्री राम' बुलवाने के लिए डंडों से पीटा जाता है, कभी समान नागरिक संहिता के नाम पर मुस्लिम पर्सनल लॉ पर हमला किया जाता है, कभी दो से ज़्यादा बच्चों के विषय को उठाया जाता है। ग़रज़ क़ाफ़िले के हर पड़ाव पर एक नया विषय खड़ा हो जाता है तथा एक वर्ग विशेष अपना राजनीतिक लाभ प्राप्त करता है।

अब प्रश्न यह है कि काशी व मथुरा तथा दिल्ली इत्यादि में मस्जिदों के साथ सरकार अराजकतत्वों को सबकुछ कर गुज़रने की छूट दे देगी जो उन्होंने बाबरी मस्जिद के साथ किया था? या सरकार उन मस्जिदों की सुरक्षा करके देश के लोकतन्त्र को दाग़दार होने से बचाएगी?

ध्यान रहे कि संघ परिवार ने सुनियोजित रूप से धीरे–धीरे लोकतन्त्र को मिटाने का सिलसिला शुरू कर दिया है तथा अपनी समस्त अलोकतान्त्रिक कार्यवाहियों के लिए संघसमर्थित नौकरशाही तथा न्यायपालिका का एक नया नेटवर्क तैयार कर लिया है। अतः ऐसी परिस्थितियों में जनता को चाहिए कि वह ख़ामोशी के साथ सिस्टम का हिस्सा बनने के बजाए लोकतान्त्रिक मूल्यों की सुरक्षा की चिन्ता करें क्योंकि इस देश के अस्तित्व तथा विकास की ज़मानत लोकतन्त्र तथा धर्मनिरपेक्षता में ही है तथा इसी में आने वाली नस्लों के लिए सुरक्षा है।

इस्लाही ख़ुतबात

रजब का महीना और कूंडे की बिदअत

मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब

"रजब के महीने के बारे में जो बात सही सनद के साथ रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से साबित है वह यह है कि जब आप रजब का चांद देखते थे तो चांद देखकर आप यह दुआ किया करते थे कि: "..... ....." (ऐ अल्लाह! हमारे लिए रजब और शाबान के महीने में बरकत अता फ़रमा और हमें रमज़ान तक पहुंचा दीजिए)

रजब का महीना रमज़ान का मुक़द्दमा है, इसलिए रमज़ान के लिए पहले से अपने को तैयार करने की ज़रूरत है, इसीलिए रसूलुल्लाह (स0अ0व0) दो महीने पहले से दुआ भी फ़रमा रहे हैं और लोगों को तवज्जो दिला रहे हैं कि अब इस मुबारक महीने के लिए अपने आप को तैयार कर लो और अपने वक़्त का निज़ाम ऐसा बनाने की फ़िक्र करो कि जब यह मुबारक महीना आए तो उसका ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त अल्लाह की इबादत में ख़र्च हो।

लेकिन इससे भी ज़्यादा आजकल समाज में फ़र्ज़ व वाजिब के दर्जे में जो चीज़ फैल गई है वह कूंडे हैं, अगर आज किसी ने कूंडे नहीं किए तो वह मुसलमान ही नहीं, नमाज़ पढ़े या न पढ़े, रोज़े रखे या न रखे, गुनाहों से बचे या न बचे, लेकिन कूंडे ज़रूर करे और अगर कोई न करे या करने वालों को मना करे तो उस पर लानत भेजी जाती है। ख़ुदा जाने यह कूंडे कहां से निकल आए? न कुरआन व हदीस से साबित हैं, न सहाबा किराम (रज़ि0) से, न ताबईन (रह0) से, न तबअ ताबईन (रह0) और न ही बुज़ुर्गान–ए–दीन से, कहीं से इसकी कोई अस्ल साबित नहीं और इसको इतना ज़रूरी समझा जाता है कि घर में दीन का कोई दूसरा काम हो या न हो लेकिन कूंडे ज़रूर होंगे। इसकी वजह यह है कि इसमें ज़रा मज़ा और लज़्ज़त आती है और हमारी क़ौम लज़्ज़त और मज़े की चाहने वाली है। कोई मेला–ठेला होना चाहिए और कोई नफ़्स के मज़े का सामान होना चाहिए और यह होता है कि जनबा! पूरियां पक रही हैं, हलवा पक रहा है, और इधर से उधर जा रही हैं और उधर से इधर आ रही हैं और एक मेला लगा हुआ है, तो चूंकि यह बड़े मज़े का काम है, इस वास्ते शैतान ने इसमें लगा दिया कि नमाज़ पढ़ो या न पढ़ो, वह कोई ज़रूरी नहीं, मगर यह काम ज़रूर होना चाहिए।

इन चीज़ों ने हमारी उम्मत को ख़ुराफ़ात में डाल दिया है। इस तरह की चीज़ों को लाज़मी समझ लिया गया है और हक़ीक़ी चीज़ें पीठ पीछे डाल दी गयी हैं। इसके बारे में धीरे–धीरे अपने भाइयों को समझाने की ज़रूरत है, इसलिए कि बहुत से लोग सिर्फ़ अनजाने की वजह से करते हैं, उनके दिलों में कोई दुश्मनी नहीं होती, लेकिन दीन से जानकारी नहीं, उन बेचारों को इसके बारे में पता नहीं है, इसलिए ऐसे लोगों को मुहब्बत, प्यार व शफ़क़त से समझाया जाए।"

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 02 | February 2022 | Volume: 14

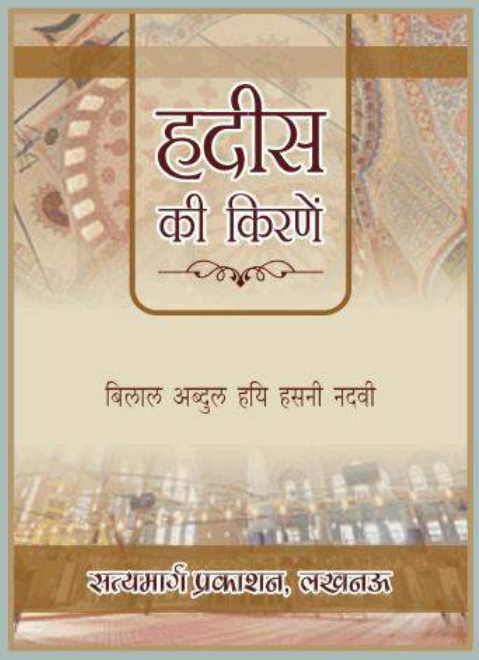

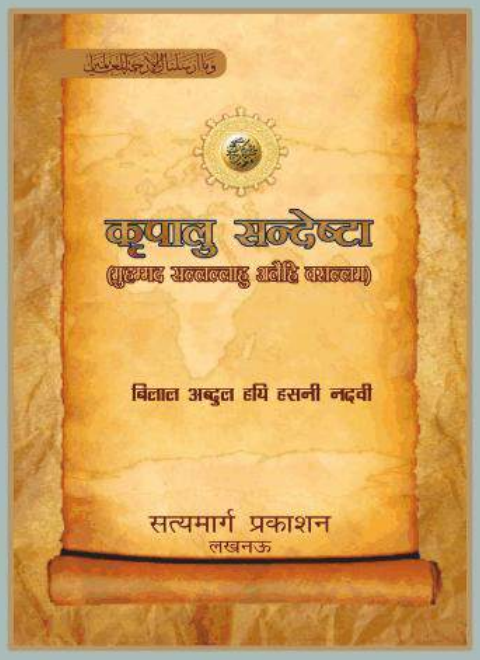

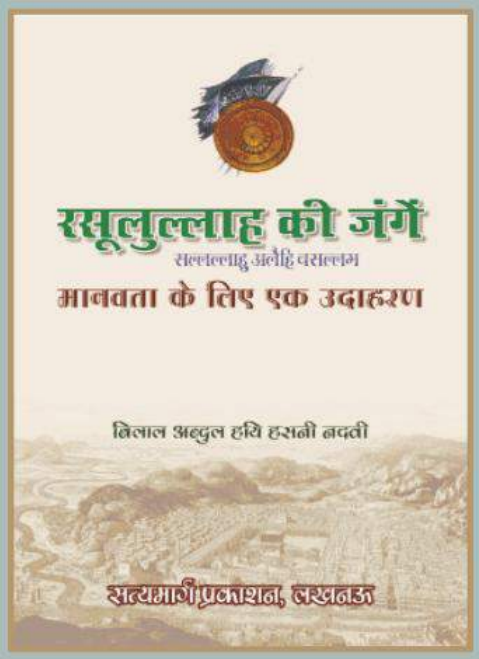

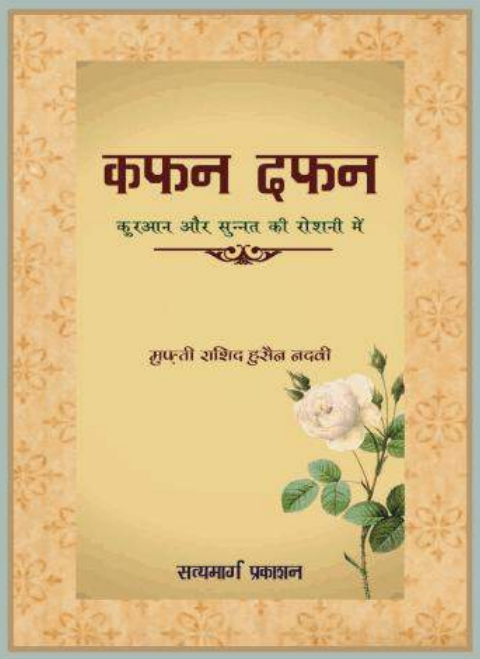

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.